Discover your divinity with us
A/C Showroom
ज्ञान गंगा ॐ मूर्ति माला केन्द्र
उजाला भवन स्टेशन रोड, दुर्ग
0788-4030383, 3293199
भगवान के वस्त्र, श्रृंगार मूर्तियां एवं समस्त पूजन सामग्री संगमरमर व पीतल की मूर्तियां राशि रत्न एवं उपरत्न उपलब्ध

राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

समय दर्शन

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

श्री
दुर्ग शहर में
सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य
माँ दुर्गा उपासक मां बगुलामुखी, माँ कामख्या, माँ भद्रकाली, माँ शतचंडी की असीम कृपा साधना द्वारा समस्त समस्याओं का मार्ग दर्शन हेतु
पं. एम.पी. शर्मा/
मो. 8109922001
फीस 251/- मात्र
पताः- श्री दुर्गा ज्योतिष कार्यालय सिकोला भाठा, सब्जी मार्केट के सामने, धमधा नाका, दुर्ग

वर्ष 13, अंक 255 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये दुर्ग, शनिवार 06 जुलाई 2024 www.samaydarshan.in

सार समाचार

केजरीवाल की जमानत याचिका पर सीबीआई को हाई कोर्ट का नोटिस

नई दिल्ली । दिल्ली हाई कोर्ट ने शुक्रवार को शराब घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की दायर जमानत याचिका पर सीबीआई को नोटिस जारी किया। जस्टिस नीना बंसल कृष्णा की बेंच ने सीबीआई से अपना जवाब दाखिल करने को कहा है। मामले की अगली सुनवाई 17 जुलाई तय की है। सुनवाई के दौरान सीबीआई का प्रतिनिधित्व कर रहे वकील ने हाई कोर्ट में जमानत याचिका दायर करने पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि सीएम केजरीवाल को जमानत के लिए पहले निचली अदालत का दरवाजा खटखटाना चाहिए था। हालांकि, बेंच ने कहा कि इस तर्क पर बाद में विचार किया जाएगा। बेंच ने सीबीआई को इस बीच अपना जवाब दाखिल करने को कहा है। इससे पहले सीएम केजरीवाल की जमानत याचिका पर तत्काल सुनवाई के लिए कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश (एसीजे) मनमोहन की अध्यक्षता वाली बेंच के सामने बुधवार को पेश किया गया था।

नितिन नबीन अब छत्तीसगढ़ भाजपा के नए प्रभारी, लता उसेंडी ओडिशा की सह प्रभारी बनाई गईं

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी ने कई राज्यों के प्रदेश प्रभारियों और सह प्रभारियों की नियुक्ति की है। छत्तीसगढ़ के वर्तमान सह प्रभारी नितिन नबीन को पदोन्नति मिली है। अब उन्हें पूर्ण रूप से प्रदेश प्रभारी बना दिया गया है। इससे पहले ओम माथुर प्रदेश के प्रभारी थे। वहीं छत्तीसगढ़ के कोंडागांव से विधायक और प्रदेश की पूर्व मंत्री रहीं लता उसेंडी को ओडिशा राज्य का सह प्रभारी बनाया गया है। और किस नेता को किस राज्य की जिम्मेदारी सौंपी गई।

जहरीली गैस के रिसाव से 9 लोगों की मौत

कुएं में गिरे 2 लोग, बचाने में गई 7 की जान

जांजगीर-चांपा (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ के अलग-अलग जिले में एक ही दिन में कुएं में डूबने से 9 लोगों की मौत हुई है। जांजगीर-चांपा जिले में 5 और कोरबा जिले में 4 लोगों की मौत पानी में डूबने से हुई है। दोनों ही हादसे कुएं में गिरे ग्रामीणों को बचाने की चक्कर में हुए हैं। दोनों घटनाओं में कुएं से जहरीला गैस रिसाव की आशंका जताई जा रही है। दोनों घटनाओं की सूचना के बाद पुलिस गांव पहुंची है। दोनों घटनाओं में ग्रामीणों की मौत पर सीएम विष्णुदेव साय ने शोक व्यक्त किया है।

मिली जानकारी के मुताबिक कटघोरा थाना क्षेत्र के ग्राम जुराली के डिपरापारा में एक घर के कुएं में सबसे पहले जहरू राम पटेल पिता स्व सोनू राम पटेल (60 वर्ष) डूब गए। इसकर जानकारी होने पर उनकी बेटी सपना पटेल पिता जहरु पटेल (16 वर्ष) कुएं में उतरी।

वह पिता को नहीं बचा सकी और खुद भी डूब गई। घटना की जानकारी होने पर मनबोध पटेल (57 वर्ष) और शिवचरण पटेल उर्फ कली (45 वर्ष) कुएं में उतरे। उनकी भी डूबने से उनकी भी मौत हो गई। हादसे की सूचना पर एसडीआरएफकी टीम मौके पर पहुंच गई है। प्रशासन के आला अधिकारी मौके पर मौजूद हैं।

इधर छत्तीसगढ़ के जांजगीर- चांपा में भी ऐसा ही हादसा हुआ है। यहां 4 लोग एक व्यक्ति को कुएं से निकालने के लिए उसमें कूद पड़े, जिसमें 5 लोगों की जहरीली गैस से मौत हो गई। यह हादसा जांजगीर के किकिरदा गांव में हुआ है। दरअसल, एक व्यक्ति लकड़ी निकालने के लिए कुएं में उतरा था, लेकिन काफी समय के बाद भी वो बाहर नहीं निकला, जिसके बाद उसे बचाने के लिए 4 लोग और कुएं में कूद पड़े, लेकिन इनमें से कोई भी जिंदा बाहर नहीं आ सका।

घटना बिर्रा थाना के ग्राम किकिरदा का है। लंबे समय से कुंए का उपयोग नहीं हो रहा था और उसे ढंक दिया गया था। शुक्रवार सुबह एक लकड़ी कुएं में गिर गया था, उसे निकालने रामचरण जायसवाल कुएं में उतरा। काफी देर तक बाहर नहीं आने पर उसे बचाने पड़ोसी रमेश पटेल नीचे उतरा और उसका दम घुटने लगा। इसके बाद उसके बेटे राजेंद्र और जितेंद्र पटेल कुएं में उतरे उनका भी दम घुट गया। फिर एक अन्य पड़ोसी टिकेश चंद्रा कुएं में उतरा और उसकी भी मौत हो गई। ऐसी आशंका है कि कुएं में जहरीली गैस रिसाव के कारण यह घटना हुई है। पुलिस गांव पहुंची है। शवों को निकालने के लिए एसडीआरएफ की टीम बुलाई गई है। हादसे में तीन परिवार के पांच लोगों की मौत हुई है।

एमपी-राजस्थान सहित 17 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

असम में बाढ़ में अब तक 56 की मौत

कश्मीर में हीटवेव, 17 जुलाई तक स्कूल बंद

नई दिल्ली(एजेंसी)। देश के कई राज्यों में भारी बारिश के चलते बाढ़ की स्थिति बन गई है। असम में बाढ़ के चलते गुरुवार को 8 लोगों की मौत हुई, जिससे अब तक मरने वालों का आंकड़ा बढ़कर 56 हो गया है। 29 जिलों के 21.13 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। काजीरंगा नेशनल पार्क में आई बाढ़ में अब तक कुल 31 जानवरों की डूबने से मौत हो चुकी है, जबकि 82 जानवरों को बाढ़ से बचाया गया है। उत्तराखंड में गंगोत्री-गोमुख ट्रैक पर चिरबासा धारा में आई बाढ़ के चलते उस पर बना लकड़ी का पुल टूट गया। इस धारा में दिल्ली के दो कांवड़िए बह गए। वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि यह घटना गंगोत्री से लगभग नौ किलोमीटर दूर हुई। ग्लेशियर के पिघलने के कारण धारा का जलस्तर अचानक बढ़ गया था। ढ्ढरूष्ठ ने शुक्रवार के लिए 17 राज्यों- जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, सिक्किम, उत्तरी पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, असम, नागालैंड,

त्रिपुरा, मिजोरम, महाराष्ट्र, गोवा में अति भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। 11 राज्यों- हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, केरल में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

कश्मीर में हीटवेव, स्कूलों में 13 दिन की छुट्टी

एक तरफ जहां बाकी देश मानसूनी बारिश से सराबोर हो रहा है, वहीं गर्मियों में भी ठंडी रहने वाली कश्मीर घाटी इन दिनों तप रही है। श्रीनगर हो या गुलमर्ग, सोनमर्ग हो या फिर अमरनाथ यात्रा रूट, पहली बार पूरी घाटी लू की चपेट में है। पारा लगातार 32 डिग्री से ऊपर बना हुआ है।

श्रीनगर पहली बार बीते 7 दिन से 35 डिग्री से ज्यादा तापमान झेल रहा है। गुरुवार को यह 35.7 डिग्री रहा। यह सामान्य से करीब 7 डिग्री ज्यादा है। इससे पहले 9 जुलाई 1999 को श्रीनगर में 37 डिग्री तापमान था।

हीटवेव के चलते घाटी के स्कूलों में 17 जुलाई तक गर्मी की छुट्टी घोषित कर दी गई है। स्वास्थ्य विभाग ने भी हेल्थ एडवाइजरी जारी कर दी है। जिन इलाकों में 15 दिन पहले तक बहुत ज्यादा भीड़ थी, वहां गर्मी के चलते पर्यटक घट गए हैं। ये हालात तब हैं, जब जम्मू-कश्मीर में मानसून दस्तक दे चुका है।

देहरादून में रॉबर्स केव (गुच्चु पानी) के पास फंसे 10 लड़कों का रेस्क्यू किया। इन्हें रस्सी के सहारे नदी पार कराई गई।

लालू का दावा- अगस्त तक ही चलेगी मोदी सरकार; तेजस्वी बोले- 10 से 12 सीटों पर राजद को हराया गया

पटना (एजेंसी)। आज राष्ट्रीय जनता दल का 28वां स्थापना दिवस है। राजद कार्यालय में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव और उनके बेटे तेजस्वी यादव समेत कई वरीय नेता और कार्यकर्ता शामिल हुए।

कार्यकर्ताओं ने लालू और तेजस्वी यादव का भव्य स्वागत किया। दोनों को चांदी का मुकुट पहनाया गया। 28वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए लालू प्रसाद यादव कि हमलोगों ने 'पिछले 27 सालों में काफी उतार चढ़ाव देखे हैं। उतार-चढ़ाव के कारण राजद मजबूत हुआ है। तेजस्वी के नेतृत्व में आगे की लड़ाई को लड़ेंगे।

लालू प्रसाद ने केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार बहुत कमजोर है। इस साल अगस्त तक ही यह सरकार चलेगी। मैं पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से तैयार रहने की अपील करता हूं, क्योंकि चुनाव कभी भी हो सकते हैं। दिल्ली में मोदी सरकार बहुत कमजोर है और यह अगस्त तक गिर सकती है।

भाजपा ने 75 प्रतिशत आरक्षण को रोकने साजिश रची

वहीं तेजस्वी यादव ने अपने पिता के बयान पर सहमति जताते हुए कहा कि केंद्र की सरकार पांच साल नहीं चलेगी। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि नीतीश कुमार 2024 में या 2025 में विधानसभा चुनाव कराए, राजद ही सरकार बनाएगी।

उन्होंने कहा कि थोड़ा और मेहनत करते तो ज़्यादा सीट जीतते। तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया कि हमलोगों को 10 से 12 सीटों पर गलती करके राजद को हराया गया।

भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि भाजपा आरक्षण विरोधी पार्टी है। जाति आधारित गणना और 75 प्रतिशत आरक्षण सीमा बढ़ाय। भाजपा सत्ता में आते ही 75 प्रतिशत आरक्षण को रोकने साजिश रची। उन्होंने कहा कि संविधान और आरक्षण विरोधी है। तेजस्वी यादव पांच लाख नौंकरियां देने का काम किया। तीन लाख नौकरी का प्रावधान फाइल भी बढ़ा दिया था।

तेलंगाना में बीआरएस को बड़ा झटका, कांग्रेस में शामिल हुए छह एमएलसी

हैदराबार्द (एजेंसी)। तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) को बड़ा झटका लगा है। गुरुवार देर रात बीआरएस के छह एमएलसी कांग्रेस में शामिल हो गए। इसी के साथ 40 सदस्यीय तेलंगाना विधान परिषद में सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी की संख्या दोगुनी होकर 12 हो गई।

मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी के दिल्ली से लौटने के बाद दांडे विट्ठल, भानु प्रसाद, बी दयानंद, प्रभाकर राव, एग्गे मल्लेशम और बसवराजू सरैया औपचारिक रूप से गुरुवार रात करीब एक बजे कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। कांग्रेस पार्टी के सूत्रों ने बताया कि पार्टी में शामिल हुए बीआरएस के छह विधान परिषद सदस्य दांडे विट्ठल, भानु प्रसाद राव, एम एस प्रभाकर, बोग्गरापु दयानंद, येग्गे मल्लेशम और बसवाराजू सरैया हैं। इस मौके पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) की प्रभारी दीपा दासमुंशी, राजस्व मंत्री पी. श्रीनिवास रेड्डी, पूर्व मंत्री सुदर्शन रेड्डी और अन्य नेता भी मौजूद थे। बीआरएस एमएलसी गुरुवार रात एक होटल में मिले और बाद में रेवंत रेड्डी के आवास पर पहुंचे। उनके शामिल होने से परिषद में कांग्रेस पार्टी की ताकत छह से बढ़कर 12 हो गई है। बीआरएस को यह झटका वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य के केशव राव के कांग्रेस पार्टी में शामिल होने के एक दिन बाद लगा है। उन्होंने राज्यसभा सदस्य पद से भी इस्तीफा दे दिया है। बता दें कि नवंबर 2023 में हुए विधानसभा चुनाव में हार के बाद से बीआरएस के छह विधायक कांग्रेस में चले गए हैं। 119 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस ने 64 सीटें जीती थीं। बीआरएस से दलबदल और सिकंदराबाद छावनी उपचुनाव में जीत के बाद इसकी ताकत 71 हो गई है।

जब मुख्यमंत्री बने शिक्षक और बच्चों को बताया आदर्श विद्यार्थी में होने चाहिए कौन से पांच गुण

बगिया मिडिल स्कूल के बच्चों के बीच क्लास में पहुंचे सीएम

रायपुर(समय दर्शन)। बगिया में राज्य स्तरीय शाला प्रवेशोत्सव में पहुंचे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज शिक्षक की भूमिका में दिखे। वे बगिया मिडिल स्कूल के बच्चों के बीच क्लास में पहुंचे। पढ़ाई लिखाई की बातों के बीच उन्होंने संस्कृत के श्लोक- ''काक चेष्टा बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च। अल्पहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणं'' के माध्यम से बताया कि एक आदर्श विद्यार्थी में पांच गुण जरूर होना चाहिए। एक छात्र को कौवे की तरह कभी हार न मानना और लक्ष्यों को पाने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। सारस की तरह अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त होकर काम करना चाहिए। श्वान की तरह जरूरत की नींद लें और सतर्क रहें। संतुलित आहार लें और अपने आराम को छोड़कर और कंफर्ट जोन से बाहर निकलकर चुनौतियों का सामना करने की क्षमता होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने बच्चों को बताया कि वे भी बगिया के इसी स्कूल से पढ़े हैं। तब यहां प्राइमरी तक की कक्षाएं लगती थीं। छत खपरैल की थी और हम जमीन में बैठ कर पढ़ते थे। हफ्ते में एक दिन सभी बच्चे अपने अपने घरों से गोबर लाकर यहां की लिपाई करते थे। अब तो स्कूल पक्के बन गए हैं। यहां कुर्सी टेबल भी लग गए हैं। शिक्षक भी पर्याप्त हैं। आप सभी मन लगाकर पढ़ें। खूब मेहनत करें, अपने समय का सदुपयोग करें और ऊंचा मुकाम हासिल करें।

सपने जरूर देखें कि बड़े होकर क्या बनना है

मुख्यमंत्री श्री साय ने बच्चों से पूछा कि वे क्या बनना चाहते हैं। सातवीं की छात्रा पूर्णिमा ने बताया कि वह शिक्षिका बन कर दूसरों को पढ़ाना चाहती हूं। मुख्यमंत्री श्री साय ने नन्ही बच्ची की सोच के लिए उसे शाबाशी दी और कहा शिक्षक राष्ट्र निर्माता होते हैं। इसी तरह छात्र राजेंद्र राम ने कहा कि वे सेना में जाना चाहते हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने शुभकामनाएं देते हुए बच्चों से कहा कि सभी को बड़े होकर क्या बनेंगे यह सपना देखना चाहिए। सपने देखेंगे तभी आप उसे पूरा करने के लिए प्रयास करेंगे। शिक्षा आपके सभी सपनों को साकार करने का सबसे अच्छा माध्यम है।

बच्चों को सुनाया अपने स्कूली दिनों का किस्सा

मुख्यमंत्री श्री साय बच्चों से बात करते हुए अपने स्कूली दिनों को याद किया और उससे जुड़ा एक किस्सा सुनाया। उन्होंने बताया कि जब वे यहां पढ़ते थे उस दौरान बड़े लोगों में हल्ला था कि गले में सुई लगा रहे हैं। एक बार हमारे स्कूल के बाहर एक गाड़ी आकर रूकी तो हम सबको लगा सुई लगाने कोई आया है और हम सब स्कूल की खिड़की से कूद कर भाग गए। तब यहां ग्रिल नहीं लगा होता था और सिर्फ चौखट होती थी। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा अपने सहपाठियों के साथ बिताए पल ताउम्र मीठी याद बनकर रह जाते हैं।

ब्रिटेन के 58वें प्रधानमंत्री बने कीर स्टार्मर

14 साल वनवास के बाद लेबर पार्टी की सत्ता वापसी; अब तक 6 मंत्रियों की घोषणा

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में शुक्रवार, 5 जुलाई को सत्ता बदल गई। सत्ताधारी कंजर्वेटिव पार्टी 14 साल बाद लेबर पार्टी से चुनाव हार गई। इसके कुछ घंटे बाद भारतवंशी ऋषि सुनक ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। लेबर पार्टी के 61 साल के कीर स्टार्मर देश के 58वें प्रधानमंत्री बन गए हैं।

सुनक ने हार स्वीकार कर पार्टी से माफी मांगी है। उन्होंने स्टार्मर को भी फोन कर जीत की बधाई दी। आम चुनाव में लेबर पार्टी को बंपर जीत मिली है। पार्टी ने कुल 650 सीटों में से 412 जीत दर्ज की है। 2 सीटों के नतीजे शनिवार को आएंगे।

सरकार बनाने के लिए 326 सीटों की जरूरत होती है। उधर कंजर्वेटिव 120 सीटों पर सिमट गई। यह कंजर्वेटिव पार्टी की पिछले 200 सालों में सबसे बड़ी हार है। ब्रिटेन के आम चुनाव में जीत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लेबर पार्टी के नेता कीर स्टार्मर को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर लिखा कि वे दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की उम्मीद करते हैं।

इसके साथ ही पीएम मोदी ने ऋषि सुनक के नेतृत्व की सराहना की और अपने कार्यकाल के दौरान भारत और ब्रिटेन के संबंधों को प्रगाढ़ करने में उनके 'सक्रिय योगदान' के प्रति आभार जताया।

नीट पीजी को लेकर बड़ा ऐलान, अब 23 जून नहीं 11 अगस्त को होगा परीक्षा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पीजी को लेकर बड़ा ऐलान किया गया है। नीट पीजी का एग्जाम अब 11 अगस्त को होगा। इससे पहले यह एग्जाम 23 जून को होने वाला था। हालांकि अब इस की तारीख को आगे बढ़ा दिया गया है।

साथ ही कट ऑफ डेट यानी परीक्षा के नतीजे 15 अगस्त को आएंगे। हालांकि, रिजल्ट की तारीखों में कोई बदलाव नहीं हुआ है, पहले भी परीक्षा की कट-ऑफ डेट 15 अगस्त ही थी। ये मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम 11 अगस्त को दो शिफ्ट में होगा। इससे पहले परीक्षा में गड़बड़ी और धांधली की आशंका के चलते इसे रद्द कर दिया गया था। नेशनल बॉर्ड ऑफ एग्जामिनेशन इन मेडिकल साइंस ने एक शुक्रवार को नोटिस जारी कर ये जानकारी दी है। नोटिस में लिखा गया है कि परीक्षा की पुरानी तारीख को रिशेड्यूल करते हुए नई तारीखों का ऐलान कर दिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

सांसद एवं विधायक ने ''एक पेड़ मां के नाम'' अभियान के तहत किया पौध वितरण

आमजनों से पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण में सहभागिता निभाने का किया आग्रह

महासमुंद (समय दर्शन)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन भी बात कार्यक्रम में देशवासियों से एक पेड़ मां के नाम लगाने के आह्वान के तहत सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी एवं विधायक महासमुंद योगेश्वर राजू सिन्हा ने आज एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौध वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर सांसद रूपकुमारी चौधरी एवं विधायक महासमुंद योगेश्वर राजू सिन्हा ने नि:शुल्क पौध वितरण वाहन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधि, अधिकारी व कर्मचारियों को पर्यावरण संरक्षण से जोडने के लिए एक पेड़ मां के नाम लगाने की अपील की। साथ ही सभी स्कूलों छात्रावास, आश्रमों, अस्पतालों एवं आंगनबाड़ियों में भी अभियान चलाकर वृहद स्तर पर पौधरोपण करने आव्हान किया। इस दौरान उप वनमंडलाधिकारी अब्दुल वहीद खान एवं परिक्षेत्र अधिकारी करमाकर एवं वन विभाग के कर्मचारी मौजूद थे। जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियों ने भी एक पेड़ मां के नाम पर पौधरोपण कर जिलेवासियों से पर्यावरण संरक्षण में अपनी जिम्मेदारी निभाने का आग्रह किया।

सामूहिक रूप से मां के नाम एक पेड़ का वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न

कार्यक्रम में कलेक्टर धर्मेश साहू एसपी पुष्कर शर्मा सहित हरिशंकर चौहान अनिकेत साहू शामिल हुए

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। सामूहिक रूप से वृक्षारोपण कर एक उत्सव के रूप में मनाया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन के बात कार्यक्रम में देशवासियों को एक पेड़ मां के नाम पौधारोपण करने का आव्हान किया था, जिसके परिप्रेक्ष्य में कलेक्टर धर्मेश साहू, पुलिस अधीक्षक पुष्कर शर्मा, परियोजना निदेशक पंचायत हरिशंकर चौहान, एसडीएम सारंगढ़ अनिकेत साहू, प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी एवं डिप्टी कलेक्टर वर्षा बसंल ने ग्राम पंचायत कोतरी के शासकीय भूमि में एक पेड़ मां के नाम थीम पर पौधारोपण किया। कलेक्टर ने वृक्षारोपण के पूर्व मनरेगा के तहत किए गए कार्य तथा वहां स्थित भवन का मुआयना किया। इस कार्यक्रम में गणमान्य नागरिक श्यामसुंदर रात्रे, सीईओ सारंगढ़ जनपद संजू पटेल सहित बिहान स्वसहायता समूह की एवं अन्य जागरूक महिलाएं, जनपद के अधिकारियों-कर्मचारियों ने भी बड़ी संख्या में उपस्थित होकर सामूहिक वृक्षारोपण किए। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की ओर ये यह वृक्षारोपण कार्यक्रम मनरेगा के तहत किया गया। इस अवसर पर सभी पर्यावरण के प्रति अपनी योगदान देकर उत्साहित एवं प्रसन्नित थे।

निधन: डूंगरमल सोनी

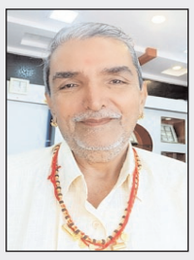

दुर्ग। ब्राह्मण पारा दुर्ग निवासी डूंगरमल सोनी (जवड़ा) 70 वर्ष का हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया है। जिनकी अंतिम यात्रा शुक्रवार 5 जुलाई को उनके निज निवास स्थान गया नगर से हारना बांधा मुक्तिधाम में किया गया। उनके 4 पुत्र व 2 पुत्री थी। वे जगदीश, जोगेश्वर, हनुमान ,श्यामसुंदर सोनी व अणची सोनी , सरला सोनी के पिता थे।

उद्यानिकी विभाग से मिले योजनाओं के लाभ से लखपति बने बलेसर

जांजगीर-चांपा (समय दर्शन)। उम्र के जिस पड़ाव में लोग घर पर बैठ जाते हैं उस उम्र अपने खेतों में जज्बे के साथ बलेसर काम करते हैं। वह न केवल खेती करते है, बल्कि दूसरों को भी उद्यानिकी फसलों की जानकारी देने से भी पीछे नहीं हटते है। ऐसे ही है जिले के किसान बलेसर जो प्रदेश सरकार की किसान हितैषी योजनाओं का लाभ पाकर खेती को लाभ का व्यवसाय बना रहे हैं। बलेसर अब पारंपरिक खेती के साथ ही उद्यानिकी विभाग की योजनाओं की जानकारी का लाभ लेकर आधुनिक खेती कर रहे हैं।

जांजगीर-चांपा जिले के विकासखण्ड पामगढ़ ग्राम पंचायत झूलन के कृषक बलेसर डहरिया है। जो कि अब आधुनिक खेती करके अच्छी आय अर्जित कर रहे हैं। बलेसर ने जब से उद्यानिकी विभाग का हाथ थामा है तब से वह प्रतिवर्ष लाखों रूपए की आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। बलेसर ने उद्यान विभाग के अधिकारी से मिलकर उद्यानिकी फसलों की खेती के साथ-साथ

विभाग में संचालित योजनाओं की जानकारी ली। बलेसर ने बताया कि पहले वे पारंपरिक रूप से धान की खेती करते थे, जिसमें उन्हें लागत के अनुपात में मुनाफा प्राप्त नहीं हो रहा था। फिर उन्हें उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों द्वारा उद्यानिकी फसलों एवं सिंचाई पद्धति के बारे में बताया। उद्यानिकी विभाग से जुड़कर उन्होंने धान की फसल के अलावा टमाटर, बैगन, लाल भाजी, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जियों को अपनी खेतीहर जमीन में लगाना शुरू किया। किसान की मेहनत देखकर उद्यानिकी विभाग की महत्वाकांक्षी योजना से उन्हें वर्ष 2018-19 में नाबार्ड पोषित योजना से 400 मीटर क्षेत्र में शेडनेट में अनुदान दिया गया। इसके बाद उन्होंने फिर कभी पीछे मुडकर नहीं देखा और उद्यानिकी विभाग के माध्यम उन्हें राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत सब्जी विस्तार अंतर्गत टमाटर एवं लौकी फसल में अनुदान दिया गया और इन सबसे प्रेरित होकर उन्होंने पत्तागोभी, बैगन की खेती शुरू की जिससे अच्छा उत्पादन प्राप्त हुआ। उन्हें उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों विभागीय प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन मिलने से उद्यानिकी की नवीन तकनीकी से खेती शुरू करते हुए कार्य किया। इसके अलावा उन्हें राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से मल्चिंग, पैक हाउस, और राज्य पोषित योजना से सामुदायिक फैसिंग की सुविधा मुहैया कराई गई। उन्होने अपनी खेतों में फसलों के लिए ड्रिप सिस्टम से सिंचाई भी की जिससे उनको खेतों में पानी की कमी नहीं हुई और उच्च गुणवत्ता युक्त फसल उत्पादन होने लगा। फसल में समय-समय पर खाद दवाई डालने के लिए उद्यान विभाग के अधिकारियों द्वारा बारिकी से बताया गया। इससे उनकी उद्यानिकी की फसल सुरक्षित हुई और वे गांव की उन्नतशील किसान की श्रेणी में खड़े हो गए। वह अपनी उद्यानिकी की फसलों को स्थानीय बाजारों में विक्रय करते हैं। जिससे उन्हें सालाना 5 लाख रूपए तक मुनाफा हो जाता है।

बेटी की कराई शादी, खरीदा ट्रेक्टर- बलेसर बताते हैं कि जब से वह उद्यानिकी विभाग की योजनाओं से जुड़कर उन्नतशील किसान बने हैं तब से उनकी जिंदगी में बहुत बदलाव आया है। उन्होंने उद्यानिकी फसलों से हुई आमदनी के पैसो का उपयोग करते हुए बेटी की शादी की है और खेती किसानी को और बेहतर बनाने के लिए एक साल पहले ट्रेक्टर भी खरीदा।

पालिका चुनाव से पहले तैयारी में जुट गई है भाजपा

अम्लेश्वर नगर पालिका परिसीमन समिति की बैठक में लिए कई अहम निर्णय, सुझाव भी मागे

पाटन। अम्लेश्वर नगर पालिका परिषद का परिसिमन का करू शुरू हो गया है। वार्ड वार प्रकाशन भी किया जा चुका है। अब भाजपा भी इसमें पीछे नहीं है। वार्डो के परिसीमन में कोई गड़बड़ी न हो इसके लिए भाजपा ने परिसीमन समिति भी गठित की है। इस समिति की आवश्यक बैठक आज रखी गई । बैठक में आगामी दिसंबर महीने में नगर पालिका परिषद अम्लेश्वर में होने वाले चुनाव के लिए वार्ड वार समीक्षा किया गया। सभी कार्यकर्ताओ एवं वरिष्ठ नेताओं ने अपने अपने विचार समिति के सामने रखे। बैठक में सभी कार्यकर्ताओ और सदस्यों से सुझाव और मार्गदर्शन लिया गया। बैठक में प्रमुख रूप से मंडल महामंत्री एवं परिसीमन समिति के संयोजक कैलाश यादव,सदस्य सांसद प्रतिनिधि फेरहा राम धीवर, सदस्य वरिष्ठ नेता रामाधार साहु,सदस्य

दयानंद सोनकर,सदस्य और नगर अध्यक्ष डॉ आलोक पाल ,सदस्य श्री मति लक्ष्मी देवांगन,शक्ति केंद्र संयोजक शिवकुमार साहु,धर्मेंद्र सोनकर,कुमार साहु,राहुल साहु,कमलेश साहु, चैनसिह साहु, ताम्र ध्वज साहु,देवा ठाकुर,टीकम यादव,नारायण यादव ,तुलसी साहु,सुनील शर्मा ,विकास सोनी सहित कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जान लेवा 3 बीमारी, सतर्कता और जागरूकता से बचा सकते है खुद की और दूसरों की जान

रिसाली। निचली बस्ती हो या फिर पॉश कालोनी मच्छर का प्रकोप हर जगह होता। मच्छर के काटने से डेंगू, चिकन गुनिया, मलेरिया जानलेवा बीमारी समेत फाइलेरिया से बचाव हम खुद कर सकते है। जरूरत है सप्ताह में एक दिन बस आधा घंटा समय की। यह समय न केवल स्वयं को स्वस्थ्य रखेगा बल्कि महामारी को पनपने से रोकेगा। शुक्रवार को नगर पालिक निगम रिसाली की आयुक्त मोनिका वर्मा और जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. सी.बी.सी. बंजारे ने कार्यशाला में बचाव के तरीकों को विस्तार से बताया। कार्यशाला में स्वास्थ्य विभाग के सुपरवाइजर, आजीविका विभाग के सिटी मिशन प्रबंधक, सी.आर.पी समेत अन्य कर्मचारी उपस्थित थे। खास बात यह है कलेक्टर ऋचा प्रकाश चैधरी फाईट द बाइट अभियान को प्राथमिकता से

जिले में लागू किया है।

आयुक्त मोनिका वर्मा ने कहा कि कर्मचारी प्रत्येक बुधवार को अपने कार्य स्थल पर सफाई करे और रविवार को अपने घर और आस पड़ोस में आधा घंटे समय खुद के लिए निकालने प्रेरित अवश्य करे। वहीं जिला मलेरिया अधिकारी ने बचाव के तरीके को विस्तार से बताया।

आप आधा घंटे में यह करे- सबसे पहले कूलर को साफकरें। अगर आपको कूलर के टैंक में लार्वा या फिर कूलर में कीड़े नजर आए तो टेमीफॉस डाले ओर 1 घंटे तक कूलर में लगे टुल्लू पंप को चालू रखे। इसके बाद पानी को खाली कर दे।

- घर के आंगन, किचन गार्डन और छत को अच्छे से देखे कि ऐसा कोई बर्तन, खिलौना का टुकड़ा या फिर ऐसा कोई चीज तो नहीं पड़ा है, जिसमें बारिश का पानी जमा हो।

- घर के परिसर में खुले में डस्टबीन रखा है तो उसे ढक कर रखे।

- घर के आस पास पानी ठहराव न होने दे।

फाइट द बाईट अंतर्गत जुड़े स्कूल के शिक्षक व बच्चे हम भी अपने घर में ड्राई डे मनाएंगे

भिलाईनगर। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्रांतर्गत बुधवार को जोन क्रमांक 04 अंतर्गत वार्ड 41 औद्योगिक क्षेत्र छावनी में तिरंगा चैंक स्थित स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम हायर सेकण्ड्री स्कूल में जागरूकता चलाया गया। प्रथम एवं द्वितीय पाली में अध्ययनरत विधार्थियों 350 एवं शिक्षकों को जिला स्वास्थ्य विभाग एवं निगम की संयुक्त टीम द्वारा जल जनित मौसमी बीमारियों के बारे में बताया गया। किस प्रकार छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने से डायरिया, उल्टी-दस्त, टाईफाइड, पीलिया आज से बच सकते हैं। हमें ध्यान देना होगा पानी उबालकर/ठंडा कर सेव करें, बाहर से जब भी आएं धर में साबुन से हाथ धोवे' एवं बासी खादय पदार्थ के सेवन से बचने की सलाह दी गई है।

फाइट द बाइट मच्छर उन्मूलन कार्यक्रम के तहत घर के आस-पास समुचित साफ-सफाई, बरसाती पानी का जमाव न होने दे साथ ही घर के कुलर, पानी की टंकी, पुराने टायर इत्यादि को समय समय पर साफकरते रहे की जानकारी दी गई। नालियों में मोबिल आईल का छिड़काव करने की सलाह दी गई। इस जन जागरूकता अभियान में विद्यालय की प्राचार्य मैडम शीला फ्रांसीस द्वारा सभी विधार्थीयों से अपने घर परिवार के साथ ही आस-पास के पॉच घरो में इन उपायो को बताने कहा। मौसमी जल जनित बीमारियों से बचाव कर अपने शहर को स्वच्छ शहर व स्वस्थ शहर बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें। महापौर नीरज पाल ने सभी नागरिकों से आवाहन किया है कि चलो मिलकर के रविवार को ड्राई डे मनाएं, सुबह 10:00 बजे से 11:00 बजे तक हम सब लोग अपने घरों में अपने अड़ोस पड़ोस साफ सफाई करें। एक दूसरे को करें।

इस अभियान में शहरी परिवार कल्याण विभाग सुपेला से सेक्टर सुपरवाइजर एस.के.दिल्लीवार, मनोज साहू, एएनएम कविता कौशिक एवं जिला मलेरिया विभाग से सर्वेलेंस निरीक्षक मोहन राव, आरएचओ राजकुमार मर्सकोले, उमेश कपूर सहित निगम के वरिष्ठ स्वच्छता निरीक्षक के.के.सिंह एवं उनकी दल के स्वास्थ्य सुपरवाइजर राजेश डहारे उपस्थित रहे।

शौचालय निर्माण में गड़बड़ी, जारी हुई नोटिस

सारंगढ़ (समय दर्शन)। जिला मुख्यालय के जपं बरमकेला अंतर्गत ग्राम पंचायत बुदबुदा के आश्रित ग्राम नावापारा छोटे का कुछ दिन पूर्व स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालय निर्माण के राशि हितग्राही के खाते में अंतरित नहीं होने का समाचार हमारे द्वारा प्रकाशित किया गया था । ग्राम नावापारा छोटे में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालय की स्वीकृति कार्यालय मुख्य कार्यपालन अधिकारी सह सचिव जिला स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) जिपं रायगढ़ के प्रशासकीय स्वीकृति क्र./4149/ जि.स्व.भा.मि. / जि.पं. / 2020 रायगढ़ दिनांक 03.09.2020 के द्वारा स्वीकृत किया गया था जिसका संपूर्ण राशि ग्राम पंचायत बुदबुदा के खाता में हस्तांतरित किया गया था। विदित हो कि ग्राम नावापारा छोटे के हितग्राहियों द्वारा दिनांक 11.09.2023 को सीईओ जपं बरमकेला को पत्र प्रेषित कर व्यक्तिगत शौचालय निर्माण प्रोत्साहन राशि आज

पर्यन्त तक अप्राप्त है, उक्त राशि को प्रदान करने हेतु लेख किया गया है। पत्र के परिपालन में मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जपं बरमकेला के का. आ.। क्रमांक / 7138/ज.पं./एस.बी.एम / 23 बरमकेला दिनांक 12. 09.2023 के द्वारा जांच दल गठित कर जांच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु आदेशित किया गया था परंतु जांच दल के द्वारा समय में जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत नहीं करने के कारण कार्यवाही करने मे विलंब हुआ। जांच दल अधिकारी को कार्यालयीन बरमकेला द्वारा कारण बताओ सूचना पत्र जारी कर स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने एवं समय में जांच कर जांचमय प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु लेख किया गया जिसके परिपालन में जांचकर्ता अधिकारी द्वारा जांचमय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है । जांचकर्ता अधिकारी द्वारा अपने प्रतिवेदन में राशि वसूली की कार्यवाही हेतु प्रतिवेदित किया गया है जिस का प्रतिवेदन कार्यालयीन पत्र क्र./1415/ज.पं,एसबीएम /2024 बरमकेला दिनांक 01 जुलाई 24 के द्वारा जिला परियोजना निदेशक, डीआर डीए हरिशंकर चौहान जिला सारंगढ़ बिलाईगढ़ (छग) ने प्रेषित किया है। चूंकि उक्त प्रकरण वर्ष 20-21 का है व मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत बरमकेला के संज्ञान में आते ही प्रकरण का निराकरण किया गया है।

एनएसयूआई ने केंद्र सरकार के लिए किया सद्बुद्धि यज्ञ

नरेंद्र मोदी चुप्पी तोड़ो, युवाओं को न्याय दो- सोनू साहू

दुर्ग (समय दर्शन)। देश के अंदर लगातार एक के बाद एक विभिन्न परीक्षा के पेपर लीक हो रहे हैं जिसमें सीधा असर छात्र का भविष्य के साथ खिलवाड़ होता नजर आ रहा है किंतु इस विषय में देश के प्रधानमंत्री मोदी जी अब तक चुप्पी साधे हुए हैं न पढ़ा हु,न पढ़ने दूंगा ऐसे कहावत को चरितार्थ करते हुए केंद्र की मोदी सरकार उनके केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान जी कहते हैं कि इसमें धांधली जैसे कोई बात नहीं है तो क्या आज अलग अलग राज्यों से जो भी आरोपी अब तक पेपर लीक मामले में जिन लोगों कि गिरफ्तारी हुई हैं क्या वे सब निर्दोष लोग हैं और यदि सब कुछ सही तरीके से संचालित हुआ है तो धर्मेंद प्रधान जी इस मुद्दे पे निष्पक्ष तरीके से जल्द से जल्द जांच कर कार्यवाही करते किंतु वे इस बात कुछ सही तरीके से जांच करने ही नहीं चाहते क्योंकि जांच में ह्ज्ञ के बहुत से अधिकारी जो इस गिरोह में शामिल होकर अलग अलग राज्यों में यह कार्य को अंजाम दे रहे हैं । जिसके विरोध में आज हिंदी

भवन के समाने गांधी पुतला दुर्ग में प्रिदेश उपाध्यक्ष सोनू साहू के नेतृत्व में एक दिवसीय विरोध प्रदर्शन के रूप में सद्बुद्धि यज्ञ कर केंद्र सरकार को नींद से जगाने के लिए विरोध प्रदर्शन कर।

सोनू साहू ने बताया कि अगर सब कुछ सही तरीके से हुआ है कोई धांधली नहीं हुई हैं तो जब हमारे नेता देश के लाखों युवाओं की उम्मीद लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी जी के द्वारा देश के सबसे बड़े सदन लोकसभा में ह्श्वश्वज्ञ परीक्षा में धांधली व त्रष्ट परीक्षा रद्द करने पेपर लीक जैसे गंभीर मुद्दे पर युवाओं के भविष्य से जुड़े मामले में उन 22 लाख परीक्षार्थी कि ओर से विपक्ष के द्वारा माननीय राहुल गांधी जी ने सत्ता पक्ष से इन मामलों में व्याप्त चर्चा कर विद्यार्थियों कि अधिकार कि रक्षा करने उन्हें न्याय दिलाने कि मांग कर सरकार से सकारात्मक चर्चा कर जल्द से जल्द इस तरह की धांधली पर रोक लगाने पकड़े गए आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने छात्र छात्राओं के मांग अनुरूप दुबारा करने कि मांग को लेकर इस ओर सरकार का ध्यानआकर्षण कराने चाहते थे किंतु सत्ता पक्ष के इसरे में लोकसभा में राहुल गांधी जी सीट पे लगे माइक बंद कर दिए जाते है और जब सरकार ऐसे एजेंसी पर कार्यवाही करने के नाम पर सिर्फ लीपा पोती कर उन बच्चों के परिजन के साथ गुमराह कर रहे हैं इसलिए एनएसयूआई द्वारा नेशनल ठग एजेंसी ऑफिस में ताला लगाने संस्थान को बैन करने कि मांग करने पर एनएसयूआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरुण चौधरी के ऊपर दिल्ली पुलिस द्वारा एफआईआर कर दिए जाते क्योंकि वरुण चौधरी उन 22 लाख परीक्षार्थी के लिए आवाज बुलंद कर न्याय दिलाने व हमारे नेता राहुल गांधी सदन में लगातार मुखर होकर सरकार के काम काज पर सवाल करने सड़क से लेकर संसद तक सरकार कि नाकामी उजागर कर जनता को बताना चाहते थे इसलिए एनएसयूआई गढ़बंधन वाली केंद्र सरकार भारतीय जनता पार्टी उनके सहयोगी दलों के नेता देश के प्रधानमंत्री और शिक्षा मंत्री जिन्हें युवाओं के भविष्य से जुड़े गंभीर विषयो पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

ऐसे भ्रष्ट और तानाशाही सरकार के गलत नीति के खिलाफदुर्ग ह्स्ड्ढ के तत्वधान में देश के प्रधानमंत्री और केंद्रीय शिक्षा मंत्री को नींद से जगाने सद्बुद्धि यज्ञ कर विरोध प्रदर्शन किया गया. इस दौरान प्रमुख रूप से आकाश कनौजिया प्रदेश महासचिव एनएसयूआई सुरेंद्र वाघमारे जिला महासचिव बॉबी गिल क्रिश, अंसु, चंदन,हर्ष,विशाल निक्कू चौबे शाश्वत पांडे वरुण केवलतनी अहमद वीसू, रतन,करण,आदित्य देवेश राजपूत,डोमेंद्र,राज देवांगन सूर्यकांत देशमुख,जतिन ठाकुर हरीश देवांगन,अमन दुबे, राहुल यादव आदि भारद्वाज,गोल्डी कोसरे सोनू यादव सहित प्रदेश जिला विधानसभा ब्लॉक एनएसयूआई के पदाधिकारी भारी संख्या में उपस्थित थे।

सार समाचार

नालंदा परिसर से एक्टिवा पार

रायपुर(समय दर्शन)। नालंदा परिसर गेट के पास खड़ी एक्टिवा को अज्ञात चोर ने पार कर दिया है। प्रार्थिया की शिकायत पर सरस्वती नगर पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थिया प्रिति साहू 29 वर्ष शिवानंद नगर खमतराई की रहने वाली है। प्रार्थिया ने थाना में शिकायत किया कि वह अपनी एक्टिवा क्रमांक सीजी 04 केटी 2392 को नालंदा परिसर गेट के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए एक्टिवा की कीमत करीब 7 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है।

अवैध शराब बेचते दो गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। सिविल लाइन और माना थाना पुलिस के टीम ने अवैध शराब बेचते दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 99 पाव देशी शराब व बिक्री रकम 280 रुपए जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार सिविल लाइन पुलिस ने तरूण नगर पंडरी में दबिश देकर अवैध शराब बेचते आरोपी अशोक बेहरा 42 वर्ष के पास से 83 पाव देशी शराब जब्त किया है। वहीं माना पुलिस ने आरोपी दिलीप दास 68 वर्ष को गिरफ्तार किया है।

गल्ले से 2 लाख से अधिक रकम पार

रायपुर(समय दर्शन)। मेटल पार्क स्थित विद्या ट्रेडर्स में झाड़ू पोछा करने के दौरान युवक ने गल्ले से 2 लाख 1 हजार रुपए पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर उरला पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी हेमकुमार साहू 35 वर्ष बंजारी नगर खमतराई का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि आरोपी आकाश जांगड़े मेटल पार्क स्थित विद्या ट्रेडर्स में झाड़ू पोछा का काम करता था। काम करने के दौरान आरोपी ने गल्ला में रखे नकदी 2 लाख 1 हजार रुपए पार कर दिया।

महाप्रभु जगन्नाथ का रथ सजधज कर तैयार

रायपुर(समय दर्शन)। महाप्रभु जगन्नाथ की रथयात्रा से पहले महाप्रभु का रथ सजधज कर तैयार हो चुका है। वही मौसी गुंडिचा का भी मंडप भी अपने अंतिम रूप में पहुंच चुका है। सेक्टर 4 स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर के रथ की बात करें तो यह भक्तों के इनोवेशन का नायाब नमूना है। रस्सी से खींचे जाने वाले इस रथ में बकायदा स्टेरिंग भी बना हुआ है जिसे हाथ और पैर के सहारे उपयोग किया जाता है।

किसानों और भू-स्वामियों को राजस्व मामले के निराकरण से मिलेगी सुविधा

बेवजह राजस्व प्रकरणों को रोकने वाले अधिकारियों पर होगी कार्यवाही - राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा

रायपुर(समय दर्शन)। राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने कहा है कि राजस्व पखवाड़ा के दौरान राजस्व प्रकरणों को समय सीमा में निराकरण सुनिश्चित करें। अविवादित राजस्व प्रकरणों के निराकरण में अनावश्यक विलंब न हो। राजस्व के बहुत से कामों के लिए समय-सीमा निर्धारित है, इसका अनिवार्य रूप से पालन किया जाए। उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग को काम मे गति लानी होगी, लोगो को भटकना न पड़े, बेवजह राजस्व प्रकरणों को रोकने वाले अधिकारियों पर कार्यवाही की जाएगी। श्री वर्मा आज धमतरी के कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा ने कहा कि जनता की सेवा के लिए हम यहां हैं। किसानों को नकली खाद, बीज, दवाई इत्यादि के बिक्री पर संबंधित संस्थानों और व्यक्तियों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जाए। अधिकारी सुनिश्चित करें कि किसान सम्मान निधि की राशि पात्र किसान को मिले। इसी तरह जिले में अवैध उत्खनन, शराब, सटोरिया इत्यादि पर कड़ी कार्यवाही की जाए। उन्होंने जिले में विभिन्न निर्माण कार्यों के लिए बजट हेतु प्रशासकीय स्वीकृति के लिए प्राक्कलन तैयार करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। समीक्षा बैठक में कुरूद विधायक श्री अजय चन्द्राकर,धमतरी विधायक श्री ओंकार साहू, सिहावा विधायक श्रीमती अंबिका मरकाम, कलेक्टर सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा ने जिले में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए कहा कि बारिश के मौसम को देखते हुए आपदा प्रबंधन के कार्यों, खाद्यान्न के भंडारण, जल शुद्धिकरण, मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए दवाईयों की उपलब्धता आदि सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

नया रायपुर में बाईक स्टंट करने वाले युवक पर कार्यवाही

रायपुर(समय दर्शन)। रायपुर यातायात पुलिस ने नया रायपुर की सड़कों में लापरवाही पूर्वक खतरनाक ढंग से बाईक स्टंट करने वाले गैंग के मुखिया को पकड़ा है तथा वाहन जब्त कर उसके खिलाफ मोटर यान अधिनियम के तहत कार्यवाही की है। बता दें कि यातायात पुलिस रायपुर को सोशल मीडिया के माध्यम से नया रायपुर की सड़कों में लापरवाही पूर्वक खतरनाक ढंग से बाईक स्टंट करते विडियो प्राप्त हुआ, जिसपर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात रायपुर ओम प्रकाश शर्मा के संज्ञान में आने पर उक्त बाईकर्स का पता तलाश कर बाईक सहित पकड़ने आदेश दिया। उक्त आदेश पर उप पुलिस अधीक्षक यातायात रायपुर गुरजीत सिंह एवं सुशांतो बनर्जी के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी यातायात भनपुरी अनिष सारथी एवं हमराह स्टाफ द्वारा उक्त बाईकर्स के वाहन के रजिस्ट्रेशन नम्बर के आधार पर उनके घर का पता तलाश किया गया व मौके पर ही बाईक सहित बाइकर्स को थाना लाया गया। जहाँ पूछताछ करने पर बाइकर्स द्वारा अपना नाम मुकेश चंद्राकर उर्फ मुक्कु बताया। ये रांवाभाठा में आटो पार्ट्स की दुकान में सेल्समेंन का काम करते है। उनका इंस्टाग्राम पर "द्वह्वद्मद्मह्व 100" नाम से आई.डी. बना है जिसमें फेमस होने के लिए अपने बाईक केटीएम सी.जी.04 एन.डी. 3569 से नया रायपुर की सड़कों पर बाईक स्टंट करके वीडियो बनाकर इडिटिंग करके वीडियो फुटेज अपलोड करते है, इससे ये फेमस होने के साथ ही अच्छा खासा पैसा भी कमा लेता है। चेक करने पर इनके इंस्टाग्राम मे 25,000 फालोवर्स है, जिसमें बहुत से कंपनियों द्वारा अपना एप्लीकेशन प्रमोट करने के लिए इन्हें पैसे का आफर किया जाता है जिससे इनकी अतिरिक्त कमाई भी हो जाता है। नया रायपुर की सड़कों पर लापरवाही पूर्वक खतरनाक ढंग से बाईक स्टंट करने के परिणाम स्वरूप यातायात पुलिस रायपुर वाहन जप्ती की कार्यवाही कर प्रकरण न्यायालय भेजा गया जहां न्यायालय द्वारा मोटर यान अधिनियम की धारा 184, 39/192, 182( )4 के तहत चालक - मालिक को 11000 रूपए के अर्थ दण्ड से दंडित किया गया साथ ही चालक का ड्राइविंग लाइसेंस निलंबन करने के लिए प्रतिवेदन परिवहन कार्यालय भेजा गया। इस दौरान वाहन चालक को भविष्य में दोबारा बाइक स्टंट करने पर कानूनी कार्यवाही करने की चेतावनी देकर छोड़ा गया। कार्यवाही के दौरान उक्त बाईकर्स मुकेश चंद्राकर उर्फमुक्कु एवं उनके परिजनों को डीएसपी ट्रैफिक गुरजीत सिंह द्वारा समझाया गया कि बाईक स्टंट करना खतरनाक है, इससे आपकी व दूसरे वाहन चालक की जान भी जा सकती है।

स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों के संबंध में मुख्य सचिव ने अधिकारियों की उच्च स्तरीय बैठक ली

रायपुर(समय दर्शन)। प्रदेश में स्वतंत्रता दिवस समारोह हर वर्ष की भाति इस वर्ष गरिमापूर्वक मनाया जाएगा। मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन की अध्यक्षता में आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में स्वतंत्रता दिवस समारोह के आयोजन संबंध में अधिकारियों की एक उच्च स्तरीय बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में स्वतंत्रता दिवस समारोह के आयोजन की तमाम तैयारियों के संबंध में व्यापक विचार-विमर्श किया गया। राजधानी रायपुर में राज्य स्तरीय समारोह पुलिस परेड ग्राउण्ड रायपुर में प्रातः 9 बजे से आयोजित होगा। मुख्य सचिव ने स्वतंत्रता दिवस समारोह की विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए अधिकारियों को जिम्मेदारी दी है। स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर शानदार परेड का आयोजन होगा। जिसमें पुलिस, सशस्त्र बल और एनसीसी, छात्र-छात्राएं भाग लेंगे। उप महानिरीक्षक छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल द्वारा परेड के आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था की जाएगी। स्कूली बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। स्कूल शिक्षा विभाग इसका समन्वय करेगा। कार्यक्रम के दौरान यातायात पार्किंग ट्रैफिक एवं सुरक्षा व्यवस्था पुलिस विभाग द्वारा की जाएगी। कार्यक्रम स्थल पर साफ-सफाई इत्यादि की सम्पूर्ण व्यवस्था नगर निगम रायपुर द्वारा की जाएगी। जिला मुख्यालयों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के लिए सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा कलेक्टरों को आवश्यक मार्गदर्शी निर्देश जारी किए जाएंगे।

ईओडब्ल्यू ने ढेबर के परिसर से जब्त किए अधजले नकली होलोग्राम

धनेली स्थित परिसर में गड़ाकर छुपाए गए थे

रायपुर(समय दर्शन)। प्रदेश में हुए ढाई हजार करोड़ के आबकारी घोटाले के मामले में ईओडब्ल्यू को महत्वपूर्ण साक्ष्य हाथ लगे हैं। ईओडब्ल्यू ने मामले में मुख्य आरोपी अनवर ढेबर के धनेली स्थित परिसर में डुप्लीकेट होलोग्राम की कई रोल अधजले हालत में जप्त किये हैं। उक्त होलोग्राम के रोल्स को जमीन में गड़ाकर रखा गया था। बता दें कि वर्ष 2019 से 2022 तक सरकारी दुकानों से अवैध शराब डुप्लीकेट होलोग्राम लगाकर अनवर ढेबर एवं उसके सिंडीकेट द्वारा अवैध रूप से बेचकर शासन को करोड़ों की आर्थिक क्षति पहुंचाई गई है। ईओडब्ल्यू के मुताबिक उपरोक्त जमीन पर अनवर ढेबर, अरविंद सिंह एवं सिंडीकेट के अन्य व्यक्तियों द्वारा फर्जी होलोग्राम को नोएडा से लाकर भण्डारण, डिस्लटिलरियों को वितरण, खाली शीशियों डिस्टीलरों को सप्लाई तथा अवैध शराब (पार्ट बी) की बिक्रीसे प्राप्त कमीशन का संग्रह किया जाता था। ईओडब्ल्यू ने बताया है कि वर्ष 2022 में ई.डी. में छापे के डर से अनवर ढेबर एवं अरविन्द सिंह के कहने पर बचे हुए डुप्लीकेट होलोग्राम को नष्ट किया गया था, जिसकी सूचना प्राप्त होने पर ईओडब्ल्यू की टीम ने गवाहों के समक्ष जेसीबी से छः फीट जमीन खुदवाकर, उसकी वीडियाग्राफी कराकर विधिवत जप्त किया गया। इस परिसर को ईओडब्ल्यू द्वारा सील करने के साथ ही डुप्लीकेट होलोग्राम भण्डारण, वितरण एवं नष्टीकरण से जुड़े अनुराग द्विवेदी, अमित सिंह एवं दीपक दुआरी को गिरफ्तार कर आज न्यायालय में पेश किया गया है। प्रकरण में अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। यह भी बता दें कि हजारों करोड़ के शराब घोटाले में शराब की अफरा-तफरी करने के लिए के लिए नकली होलोग्राम का प्रयोग किया गया था। इस मामले की ईडी के बाद ईओडब्ल्यू भी जांच कर रही है।

गरीबों के डॉक्टर अजय सहाय को जयपुर में मिला इंडियाज़ बेस्ट डॉक्टर अवॉर्ड

रायपुर। शहर के प्रतिष्ठित चिकित्सा विशेषज्ञ और अंचल में गरीबों के डॉक्टर के नाम से विख्यात प्रो डॉ अजय सहाय को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर जयपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में इंडियाज बेस्ट डॉक्टर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। हेल्पेज मीडिया द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में देश भर से पधारे सैकड़ों चिकित्सकों के बीच इस बात की जानकारी दी गई कि डॉ अजय सहाय आज तक छत्तीसगढ के दूरस्थ ग्रामीण एवम आदिवासी बहुल क्षेत्रों और नक्सल प्रभावित इलाकों तथा कमजोर तबकों के लिए , सैकड़ों निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर चुके हैं और उनके रायपुर स्थित हॉस्पिटल में आर्थिक रूप से अक्षम मरीजों के लिए इलाज की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है , तो पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। विदित हो कि डॉ सहाय एक प्रसिद्ध समाज सेवी,फिल्म अभिनेता, निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक भी हैं। इन क्षेत्रों में उत्कृष्ट गतिविधियों और उपलब्धियों के लिए उन्हें सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय , राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर के सम्मान मिल चुके हैं। चिकित्सा के क्षेत्र का सबसे प्रतिष्ठित सम्मान डॉ बी सी राय अवॉर्ड और सिनेमा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें दादा साहेब फाल्के अकादमी पुरस्कार मिल चुके हैं।

झारखंड के राज्यपाल सी पी राधाकृष्णन झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के अध्यक्ष हेमंत सोरेन के साथ रांची में एक बैठक के दौरान। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने हेमंत सोरेन को मनोनीत मुख्यमंत्री नियुक्त किया और उन्हें शपथ लेने के लिए आमंत्रित किया।

एयरटेल का पलटवार : डेटा ब्रीच के आरोपों को किया खारिज, बताया कंपनी की प्रतिष्ठा को धूमिल करने की नाकाम कोशिश

रायपुर। एयरटेल इंडिया ने डेटा उल्लंघन के दावों का दृढ़ता से खंडन किया है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि एयरटेल इंडिया के 375 मिलियन उपयोगकर्ताओं के डेटा को डार्क वेब पर बिक्री के लिए उपलब्ध कराया गया था। एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर डार्क वेब इंफॉर्मर की पोस्ट के अनुसार, एक गैर-प्रमाणिक डेटा हैकर जिसका नाम ज़ेनज़ेन है, कथित तौर पर एयरटेल इंडिया ग्राहकों से संबंधित डेटा बेच रहा है। ताज़ा जानकारी के अनुसार एक्स पर की गई यह पोस्ट डिलीट कर दी गई है। कथित डेटा ब्रीच में जून 2024 तक अपडेट किए गए 375 मिलियन ग्राहक विवरण शामिल हैं। जून 2024 में हुआ दावा किया गया ब्रीच में मोबाइल नंबर, नाम, जन्म तिथि, पिता का नाम, स्थानीय पता, स्थायी पता, वैकल्पिक नंबर, ईमेल आईडी, लिंग, राष्ट्रीयता, कनेक्शन प्रकार, सिम एक्टिवेशन तिथि, आधार, फोटो आईडी प्रमाण विवरण और पता प्रमाण विवरण जैसे डेटा फ़ील्ड शामिल हैं। यह डेटा, जो एयरटेल इंडिया के ग्राहकों से संबंधित है, एक्सएमआर में 50,000 अमरीकी डालर मूल्य में बेचा जा रहा है। डार्क वेब इंफॉर्मर ने एक कम्युनिटी जिसे ब्रीचफोरम्स कहा जाता है, वहां से स्क्रीनशॉट पोस्ट किए, जिसमें एक खाते ने नवीनतम एयरटेल इंडिया ग्राहक डेटाबेस की बिक्री के बारे में पोस्ट किया है। संयोग से यह वही विक्रेता है, जिसने हाल ही में भारतीय विदेश मंत्रालय के डेटा लीक में भी अपना हाथ होने का दावा किया था।

मुख्यमंत्री जनदर्शन : ट्रायसायकल मिलने पर दिव्यांग पति-पत्नी के चेहरे खिल उठे

दिव्यांगता कमजोरी नहीं, मन के हौसले से जीवन की उड़ान

रायपुर(समय दर्शन)। दिव्यांगता को कमजोरी नही मान कर हौसले से जीवन को सहज और सरल तरीके से जीने की कला कोई श्री भागवत से सीखे। जन्म से ही दोनों पैरों से विकलांग श्री भागवत आरंग विकासखंड के ग्राम केशला के रहने वाले है। शिक्षा समाप्ति के बाद बिजली विभाग में कॉल अटेंडर के रूप में कार्य करना शुरू किया। श्री भागवत की दिव्यांगता के चलते विवाह में दिक्कतें हुई। ऐसे में उन्होंने दिव्यांग लड़की से विवाह करने का फैसला लेकर दिव्यांग वीणा निषाद से विवाह किया। बिजली विभाग फोन अटेंडर के रूप में कार्य करने से होने वाली आय से घर परिवार चलाने में दिक्कते खड़ी होना प्रारम्भ हो गया। वैसे भी उन्हें कार्यस्थल तक आने जाने के लिए दूसरों की मदद लेनी होती थी। किसी पर आश्रित नही होने की महत्वाकांक्षा उसे अंदर ही अंदर खाये जा रही थी। कही भी आने जाने की सुविधा के लिए श्री भागवत ने निःशुल्क बैटरी चलित ट्रायसाइकल के लिए समाज कल्याण और सम्बन्धित विभागों में आवेदन देने के बाद भी पिछले 2 सालों से उन्हें सहायता नही मिल पा रहा था। ऐसे में उन्हें मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय द्वारा आमजनों की शिकायतों और मांगो को पूरा करने के लिए जनदर्शन के बारे में पता चला। श्री भागवत मुख्यमंत्री के सहृदयता के बारे में विभिन्न माध्यमो से अवगत थे। उन्हें पूरे विश्वास था कि जनदर्शन में जाने से निश्चित रूप से मदद मिलेगी। जनदर्शन कार्यक्रम में श्री भागवत अपनी दिव्यांग पत्नी के साथ उपस्थित होकर बैटरी चलित ट्रायसाइकल हेतु मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को आवेदन प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री ने उनके आवेदन पर संवेदनशीलता से विचार कर दोनों को तत्काल बैटरी चलित ट्रायसाइकल प्रदान करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री के निर्देश पर अमल करते हुए दिव्यांग पति-पत्नी को बैटरी चलित ट्रायसाइकल प्रदान की गई। ट्रायसाइकल मिलने पर दिव्यांग पति पत्नी के खुशी का ठिकाना न रहा। इसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री का दिल से आभार व्यक्त किया।

ज्वेलर्स दुकान से दस लाख का जेवर पार

रायपुर(समय दर्शन)। रायपुर में लगातार हो चोरी की घटनाओं से लोग दहशत में आ गए हैं। इसी बीच चोरों ने एक और वारदात को अंजाम दिया है। मिली जानकारी के अनुसार रायपुर के टिकरापारा थाना क्षेत्र के बोरिया इलाके में चोरों ने ज्वेलर्स दुकान को निशाना बनाया और करीब 10 लाख रुपये की चोरी कर फरार हो गए। घटना की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची टिकरापारा थाना पुलिस जांच में जुट गई है। पुलिस चोरों की तलाश के लिए सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। इससे पहले विधानसभा थाना क्षेत्र के दो अलग-अलग कालोनियों में चोरों ने धावा बोलते हुए तीन दिन के भीतर 15 लाख रुपये नकदी सहित सोने, चांदी और डायमंड की अंगूठी पार कर दी। तीन स्थानों में चोरी की घटनाएं हुई है, उनमें दो चोरी की घटना एक ही रात को हुई। घटना का एक सीसीटीवी भी सामने आया है। जिसमें चोर ने अपने चेहरे को स्कार्फसे ढंका हुआ है। वह फिलहाल पुलिस की पकड़ा से बाहर है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर उसकी पतासाजी जारी है।

संपादकीय

सुरक्षित स्थान हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार

साफ फुटपाथ और चलने के लिए सुरक्षित स्थान हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। इसे मुहैय्या कराना राज्य प्राधिकरण का दायित्व है। बंबई उच्च न्यायालय की खंडपीठ ने यह कहा। फुटपाथ और सड़कों को प्रधानमंत्री और अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए एक दिन में खाली कराया जा सकता है, तो सभी लोगों के लिए रोज ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता। अदालत ने यह भी कहा कि नागरिक कर देते हैं, उन्हें साफ फुटपाथ और चलने की सुरक्षित जगह की जरूरत है। राज्य सरकार के सख्त कार्रवाई करने की आवश्यकता और बरसों से अधिकारियों द्वारा इस मुद्दे पर काम करने की बातें बनाने पर भी अदालत ने नाराजगी जताई। इस दिशा में कठोर कदम उठाने के साथ ही संबंधित अधिकारियों में इच्छाशक्ति की कमी की बात भी की। यह हालत केवल महानगरों की ही नहीं है। अव्वल तो फुटपाथ बमुश्किल नजर आते हैं। उन पर जबरदस्त कब्जा है। रेहड़ी-खोमचे वाले तो फुटपाथों को घेर ही लेते हैं। बड़े दूकानदार भी अपने माल के प्रदर्शन और फिजूल/रद्दी सामान रखने के लिए उसका अतिरिक्त स्थान की तरह धड़ल्ले से उपयोग करते हैं। कई स्थानों पर फुटपाथों को पार्किंग स्थल बना कर प्राधीकरण खुद वसूली के ठेके देता नजर आता है। अनधिकृत फेरी वालों और रेहड़ी वालों के लिए किसी भी सरकार और प्राधिकरण द्वारा कोई विशेष स्थान तय नहीं किया जाता। यह सच है कि अपने यहां घूम-घूम कर तथा अस्थायी तौर पर बैठकर सामान बेचने वाले बहुसंख्य लोग हैं। यह उनकी रोजी-रोटी है। इन्हें उजाड़ा जाना कतई उचित नहीं कहा जा सकता। मगर आर्थिक तौर पर कमजोर लोगों को मदद किया जाना भी जरूरी है। भारतीय संविधान के अनुसार, 1950 के अनुच्छद 19(1)(छ) में कमजोर वर्ग को फुटपाथ पर काम करने से रोका नहीं जा सकता। जैसा कि अदालत ने कहा, प्रधानमंत्री और अन्य विशिष्टों के लिए मिनटों में खाली कराए जाने वाले फुटपाथों को आम नागरिक के लिए मुहैया कराने का कोई प्रयास नहीं होता। छोटे बच्चों, बुजुगरे तथा पैदल चलने वाले अन्य लोगों की सुविधा की अनदेखी पूरे देश में होती है जिसके लिए बेशक, राज्य सरकारें दोषी कही जा सकती हैं। यही कारण है कि सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाने वालों में पैदल यात्रियों की संख्या में कोई कमी नहीं आ रही है।

आखिरकार टी-20 विश्व कप चैंपियन बना भारत

मनोज चतुर्वेदी

भारत आखिरकार, टी-20 विश्व कप में चैंपियन बन गया। उन्होंने बारबाडोस के केनसिंग्टन ओवल में खेले गए फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रनों से हरा कर यह सफलता हासिल की है। भारत ने टी-20 विश्व कप को दूसरी बार जीता है। इससे पहले 2007 में इसकी शुरुआत होने पर महेंद्र सिंह धोनी की अगुआई में चैंपियन बना था। धोनी की कप्तानी में ही भारत ने 2011 में वनडे विश्व कप और 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी जीती। पर इसके बाद से सफलता रूठी रही। पिछले साल नवम्बर में भारतीय टीम वनडे विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया के हाथों हारी तो लगा कि टीम में चैंपियन बनने का दम नहीं है। पर सात माह में ही टीम चैंपियन का सपना पूरा करने में सफल रही। भारत जब वनडे विश्व कप में हारा तो रोहित शर्मा की कप्तानी पर सवाल उठने लगे थे। माना जा रहा था कि किसी युवा को टीम की कमान सौंपी जा सकती है। लेकिन रोहित जब पहली बार चयन समिति से मिले तो उन्होंने कहा कि हमारी टीम के खिलाड़ियों को खारिज करना सही नहीं होगा क्योंकि हमने लीग चरण में चैंपियन ऑस्ट्रेलिया सहित हर टीम को हराया है। चयन समिति को इससे लगा कि रोहित टी-20 विश्व कप में कप्तानी करने को तैयार हैं। तब उन्हें ही विश्व कप में कप्तान बनाने का ऐलान हुआ। इसके बाद रोहित ने कोच राहुल द्रविड़ और सपोर्ट स्टाफ के साथ मिल कर टीम के खेलने के अंदाज को नया आयाम दिया। इसे बाद टीम ने मुश्किल में फंसने के बाद भी आक्रामक रुख नहीं छोड़ा और यह बदलाव ही टीम को चैंपियन बनाने में सफल रहा। इस सफलता ने कोच राहुल द्रविड़ हों या कप्तान रोहित शर्मा सभी की छवि को नया रूप दे दिया है। राहुल बेजोड़ खिलाड़ी होने के बावजूद कभी विश्व कप जीतने वाली टीम का हिस्सा नहीं बन सके थे। अपनी कप्तानी में बारबाडोस में ही वनडे विश्व कप में खराब प्रदर्शन से दो-चार हो चुके थे। लेकिन अब इसी मैदान से विश्व कप जिताने वाले कोच के तौर पर अपनी इस पारी को विराम दे रहे हैं। जहां तक बात रोहित की है तो वह अपनी कप्तानी में टीम को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप और वनडे विश्व कप के फाइनल में ले जा चुके थे पर चैंपियन कप्तान का टेग उनके ऊपर नहीं लग सका था। वह भारत को वनडे और टी-20 रैंकिंग में नंबर एक पर पहुंचाने में सफल रहे पर फिर भी विश्व कप जीतने वाले कप्तानों कपिल देव की जमात में शामिल नहीं हो सके थे पर अब टी-20 विश्व कप जीत कर वह इस जमात में शामिल हो गए हैं। रोहित और द्रविड़ की कप्तान-कोच की जोड़ी की तरह ही विराट और रवि शास्त्री की जोड़ी ने भी टीम को ढेरों सफलताएं दिलाई पर टीम को विश्व कप नहीं जिता सकी। पर विराट इससे पहले वनडे विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली टीमों में शामिल रहे थे और उनकी कप्तानी में भारत अंडर-19 विश्व कप भी जीत चुका था। अब टी-20 विश्व कप भी उनकी झोली में आ गया है। वह चारों ट्रॉफियां जीतने वाले दुनिया के इकलौते खिलाड़ी बन गए हैं। भारत ने जिस तरह से फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को फतह किया, उसे सालों-साल याद रखा जाएगा। भारत ने जब पहले बल्लेबाजी करके सात विकेट पर 176 रन बनाए तो यह लगा कि वह जरूरत से 10-15 रन पीछे रह गया। हालांकि यह विश्व कप फाइनल का अब तक का सर्वश्रेष्ठ स्कोर था। दक्षिण अफ्रीका के क्लासेन और क्विंटन डिकॉक खेल रहे थे तो लगा कि भारत के रन कम रह गए। लेकिन हार्दिक पांडया ने 17वें ओवर में गेंदबाजी के लिए आने पर पहले क्लासेन और फिर डेविड मिलर को आउट करके दक्षिण अफ्रीका की तरफ झुके मैच को भारत के पक्ष में कर दिया।

हाथरस हादसे में मौतों की जवाबदेही तय हो

ललित गर्ग

उत्तर प्रदेश के हाथरस में मंगलवार को एक सत्संग के समापन के बाद मची भगदड़ में एक सौ इक्कीस लोगों के मरने एवं सैकड़ों लोगों के घायल होने की हृदयविदारक, दुःखद एवं दर्दनाक घटना ने पूरे देश को विचलित किया है। ऐसी घटनाएं न केवल प्रशासन की लापरवाही एवं गैर जिम्मेदारी को उजागर कर रही है बल्कि धर्म के नाम पर पनप रहे आडम्बर, अंधविश्वास एवं पाखण्ड को भी उजागर कर रही है। ऐसी त्रासदियां एवं दिल को दहलाने देने वाली घटनाओं से जुड़े पाखण्डी बाबाओं की कारगुजारियों से हिन्दू धर्म भी बदनाम हो रहा है, जबकि सैकड़ों लोगों की जान लेने वाले बाबा को हिंदू धर्म से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। यह हादसा अनेक सवालों को खड़ा करता है, बड़ा सवाल है कि ऐसे बड़े आयोजन में सुरक्षा उपायों की अनदेखी क्यों होती है? सवाल उठता है कि इतना बड़ा आयोजन बिना पुख्ता इंतजाम के किसकी अनुमति से किया जा रहा था? क्या सुरक्षा मानकों का पालन किया गया? क्या इतने बड़े आयोजन की सुरक्षा का जिम्मा पुलिस-प्रशासन का नहीं होता? क्या आयोजन-स्थल पर निकास द्वार, पानी, हवा, वैकल्पित चिकित्सा एवं चिकित्सक, गर्मी से बचने के पुख्ता इंजताम जरूरी नहीं थे? जवाबदेही तय हो भगदड़ में गयी जानों की। जाहिर है मौतों के बढ़ते आंकड़ों के साथ ही घटना पर लीपापोती की कोशिश भी जमकर होगी, राजनीतिक दल एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराते हुए जमकर राजनीति भी करेंगे। यह तय है कि ऐसे बाबाओं की दुकान बिना राजनेताओं के वरदहस्त के चलनी संभव नहीं है।

हाथरस के सिकंदराराऊ के निकट फुलरई के एक खेत में कथित हरि बाबा के एक दिवसीय सत्संग के दौरान यह हादसा हुआ। इस बाबा से जुड़ी बातें विसंगतियों से भरी है। सफेद कोट-पेंट, टाई पहनने वाला यह बाबा कोई पंडित नही है न साधु संत है, यह जूता पहनकर प्रवचन देता था। इस बाबा को कितने वेद पुराण का ज्ञान है? यह किस परंपरा से है? इसके गुरु कौन हैं? ऐसे अनेक प्रश्न है जो बाबा को शक एवं संदेह के घेरे में लेते हैं। इन्हें हिन्दू बाबा कैसे कहा जा सकता है? हिंदू धर्म में ऐसा कहां होता है? यह बाबा पहले पुलिस सेवा में थे और जिनका मैनपुरी में भव्य एवं महलनुमा आश्रम है। घटना के बाद बाबा फरार है। पुलिस उसकी तलाश में जुटी है। भारत में भोली-भाली जनता को ठगने एवं गुमराह करने वाले ऐसे पाखण्डी बाबाओं की बाढ़ आई हुई है। इस तरह की घटनाएं केवल जनहानि का कारण ही नहीं बनतीं, बल्कि देश एवं धर्म की बदनामी भी कराती हैं। इन घटनाओं पर पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के बजाए राजनीति करना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है और निंदनीय भी।

हाथरस की घटना कितनी अधिक गंभीर एवं चिन्ताजनक हैं, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री ने लोकसभा में अपने संबोधन के बीच इस हादसे की जानकारी दी एवं शोक-संवेदना व्यक्त की। दुनिया भर में इस घटना को लेकर दुःख जताया जा रहा है। यह तय है कि हाथरस में इतनी अधिक संख्या में लोगों के मारे जाने पर शोक संवेदनाओं का तांता लगेगा, लेकिन क्या ऐसे हादसों को नियंत्रित करने वाले ऐसे कोई उपाय भी सुनिश्चित कर सकेंगे, जिससे भविष्य में देश को शर्मिंदा करने वाली ऐसी घटना न हो सके? प्रश्न यह भी है कि आखिर धार्मिक आयोजनों में धर्म-कर्म का उपदेश देने वाले लोगों को संयम और अनुशासन की सीख क्यों नहीं दे पाते? कब तक ऐसे आयोजन धन कमाने के माध्यम बनते रहेंगे, जब जब धर्म का ऐसे पाखण्ड एवं पाखण्डियों से गठबंधन हुआ है, तब तक धर्म अपने विशुद्ध स्थान से खिसका है। यह प्रश्न इसलिए, क्योंकि कई बार ऐसे आयोजनों में भगदड़ का कारण लोगों का असंयमित व्यवहार भी बनता है। ऐसा लगता है कि अपने देश में धार्मिक-सामाजिक आयोजनों में कोई इसकी परवाह नहीं करता कि यदि भारी भीड़ के चलते अव्यवस्था फैल गई तो उसे कैसे संभाला जाएगा? क्या इसलिए कि प्रायः मारे जाने वाले लोग निर्धन एवं गरीब वर्ग के होते हैं?

एक डरावनी एवं संवेदनहीन हकीकत है कि हम ऐसे धर्म एवं धार्मिकता से जुड़े पिछले हादसों से कोई सबक नहीं सीखते। हाल के दिनों में भीड़भाड़ वाले धार्मिक आयोजनों में भगदड़ में लोगों के मरने के मामले लगातार बढ़े हैं। सवाल उठना स्वाभाविक है कि भीड़ के बीच होने वाले हादसों को कैसे रोका जाए। दो साल पहले माता वैष्णो देवी परिसर में भगदड़ में बारह श्रद्धालुओं की मौत हुई थी। अप्रैल 23 में बनारस की भगदड़ में 24 लोग मरे थे। खाटू श्याम में भी भीड़ में दब कर 4 लोगों की मौत हुई। इंदौर में पिछले साल रामनवमी के दिन बावड़ी की छत गिरने से पैंतीस लोग मर गये थे। इसी तरह 2016 में केरल के कोल्लम के एक मंदिर में आग लगने से 108 लोगों की मौत हुई और दो से अधिक घायल हुए थे। पंजाब के अमृतसर में दशहरे के मौके पर रावण दहन देख रहे साठ लोगों के ट्रेन से कुचलकर मरने की घटना को नहीं भूले हैं। देश में भीड़ की भगदड़ से होने वाले 70 फीसदी हादसे धार्मिक आयोजनों के दौरान ही होते हैं। हाल में दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्थल से जुड़ा हादसा मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में हुआ, जहां हज यात्रियों पर गर्मी का सितम इस कदर कहर बना कि 900 से ज्यादा मौतें हुई, जिनमें 90 भारतीय ने भी जाने गंवाई।

विडम्बना है कि इन बड़े-बड़े हादसों से न तो जनता कुछ सीख लेती और न ही प्रशासन। यह हैरानी की बात है कि किसी ने यह देखने-समझने की कोई कोशिश नहीं की कि भारी भीड़ को संभालने की पर्याप्त व्यवस्था है या नहीं? यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि इस आयोजन की अनुमति देने वाले अधिकारियों ने भी कागजी खानापूर्त्ति करके कर्तव्य की इतिश्री कर ली। यदि ऐसा नहीं होता तो किसी ने इस पर अवश्य ध्यान दिया होता कि आयोजन स्थल के पास का गड्ढा लोगों की जान जोखिम में डाल सकता है। जैसे-जैसे जीवन में धर्म का पाखण्ड फैलता जा रहा है, सुरक्षा उतनी ही कम हो रही है, जैसे-जैसे प्रशासनिक सर्तकता की बात सुनाई देती है, वैसे-वैसे प्रशासनिक कोताही के सबूत सामने आते हैं, ऐसे आयोजनों में मरने वालों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन हर बड़ी दुर्घटना कुछ शोर-शराबें के बाद एक और नई दुर्घटना की बाट जोहने लगती है। सरकार और सरकारी विभाग जितनी तत्परता मुआवजा देने में और जांच समिति बनाने में दिखाते हैं, अगर सुरक्षा प्रबंधों में इतनी तत्परता दिखाएं तो ऐसे जघन्य हादसों की संख्या घट सकती है। बहरहाल आने वाले दिनों में जांच के बाद किसी के सिर पर लापरवाही का ठीकरा फोड़ा जाएगा। मगर इन मौतों का कसूरवार कौन है? जिन लोगों ने अपनों को खोया है, उनकी कमी कैसे पूरी होगी? कहा जा रहा है कि यह एक निजी कार्यक्रम था, कानून व्यवस्था के लिये प्रशासन की ड्यूटी लगाई गई थी, लेकिन आयोजन स्थल पर भीतरी व्यवस्था आयोजकों के द्वारा की जानी थी। अब बड़े अधिकारियों का घटना स्थल पर जाने का सिलसिला शुरू हो चुका है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी घटनास्थल पर पहुंच चुके हैं। उनके तीन मंत्री पहले से वहां पहुंचे हुए है। इस एवं इससे जुड़ी कार्रवाइयों से संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि उत्तर प्रदेश सरकार ने घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं और दोषी लोगों के खिलाफकठोर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है, क्योंकि आमतौर पर यही देखने में आता है कि इस तरह के मामलों में कार्रवाई के नाम पर कुछ अधिक नहीं होता। इसी कारण रह-रहकर ऐसी घटनाएं होती रहती हैं और उनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु अपनी जान गंवाते हैं। इसके बावजूद कोई सबक सीखने को तैयार नहीं दिखता है। धार्मिक आयोजनों में अव्यवस्था और अनदेखी के चलते लोगों की जान जाने के सिलसिले पर इसलिए विराम नहीं लग पा रहा है, क्योंकि दोषी लोगों के खिलाफकभी ऐसी कार्रवाई नहीं की जाती, जो नजीर बन सके।

आगामी पांच वर्षों में भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण हो सकता है दुगना

प्रह्लाद सबनानी

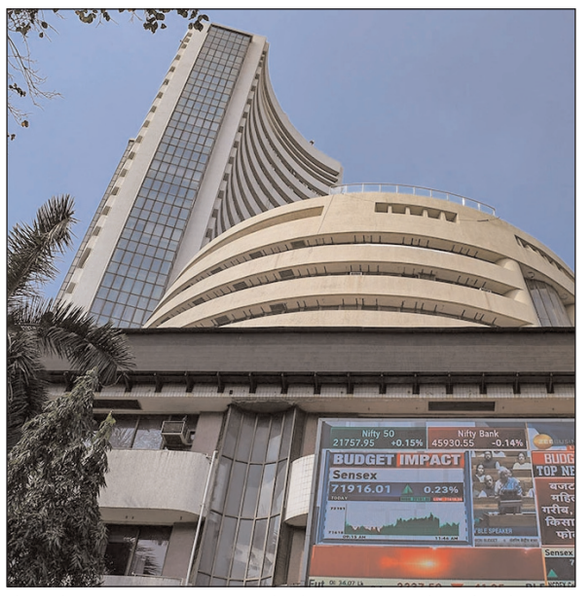

पूरे विश्व में विभिन्न देशों के शेयर (पूंजी) बाजार में निवेश करने के सम्बंध में विदेशी निवेशक संस्थानों को सलाह देने वाले एक बड़े संस्थान मोर्गन स्टैनली ने हाल ही में अनुमान लगाया है कि बहुत सम्भव है कि भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण आगे आने वाले 5 वर्षों में दुगना हो जाए।

आज खुदरा निवेशक, देशी संस्थागत निवेशक, म्यूचूअल फंड, आदि द्वारा भारतीय शेयर बाजार में औसतन लगभग 1500 करोड़ रुपए के शेयरों की रोजाना खरीद हो रही है अर्थात प्रतिदिन 1500 करोड़ रुपए भारतीय शेयर बाजार में डाले जा रहे हैं, जिसके चलते ही विदेशी निवेशक संस्थानों द्वारा भारतीय शेयर बाजार में शेयर बेचे जाने के बावजूद भारतीय शेयर बाजार पर कुछ बहुत बड़ा असर होता दिखाई नहीं दे रहा है अर्थात अब भारतीय निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार को अपने दम पर सम्हाल लिया है। अब, जब भारत में कई कम्पनियां अपनी विस्तार योजनाओं को लागू करने जा रही हैं अतः इन कम्पनियों के द्वारा नए शेयर, बाजार में जारी किए जाएंगे, जिन्हें खरीदने के लिए विदेशी संस्थागत निवेशक भी अब से लगभग 6 माह बाद भारत में अपना निवेश वापिस लाएंगे।

वर्ष 1993 से वर्ष 2013 तक विदेशी निवेशक भारतीय शेयर बाजार में लगातार खरीद कर रहे थे और देशी संस्थागत निवेशक लगातार बेच रहे थे। वर्ष 2014 के बाद से यह सब बदलने लगा क्योंकि 2015 में पहली बार केंद्र सरकार ने प्रॉविडेंट फंड को शेयर बाजार में निवेश की अनुमति दी थी। इसी प्रकार की अनुमति 401च योजना के अंतर्गत अमेरिका ने अपने प्रॉविडेंट फंड संस्थानों को वर्ष 1980 में दी थी। इसके बाद अमेरिकी शेयर बाजार में उच्छाल देखने को मिला था। अमेरिका में आज संस्थागत निवेशकों का लगभग 40 प्रतिशत भाग शेयर बाजार में निवेश रहता है जबकि भारत में यह अभी भी बहुत कम अर्थात लगभग 8 प्रतिशत ही है, इस प्रकार भारत को अभी तो बहुत आगे जाना है।

भारत में पिछले वर्ष घरेलू बचत 70,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर के आसपास थी, उसमें से केवल 5,000 से 6,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर ही शेयर बाजार में निवेश किया गया था, को कुल घरेलू बचत का 10 प्रतिशत से भी कम है। 5,000 से 6,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का सोने में निवेश होता है एवं लगभग 35,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का प्रॉपर्टी में निवेश होता है। इस प्रकार, भारत में शेयर बाजार में निवेश बढ़ाने की बहुत अधिक गुंजाइश मौजूद है। साथ भी अब वैश्विक स्तर पर भी यह सिद्ध हो चुका है कि सामान्यतः शेयर बाजार में सबसे अधिक रिटर्न मिलता है, अतः भारत के शेयर बाजार में निवेश आगे आने वाले समय में तेजी से बढ़ने वाला है। यदि भारत में कुल बचत का 10 प्रतिशत से आगे बढ़कर 15 प्रतिशत निवेश शेयर बाजार में होने लगे तो केवल देशी निवेशकों का निवेश ही बढ़कर 7,500 से 8,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर जाएगा।

पिछले 10 वर्षों में भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था में दीर्घकालीन स्थिरता (मैक्रो स्टेबिलिटी) पर बहुत ध्यान दिया है। इससे मुद्रा स्फीति की दर में होने वाला उतार चढ़ाव नियंत्रण में रहा है और अब यह सबसे न्यूनतम स्तर पर आ गया है। 70-75 वर्षों में ऐसी स्थिरता देखी नहीं गई है। इसके कारण शेयर बाजार में, रुपए की बाजार कीमत में एवं बांड मार्केट आदि में सब जगह उतार चढ़ाव थम गया है और इन सभी क्षेत्रों में स्थिरता आ गई है। पिछले 10 वर्षों में भारत में बहुत अधिक आर्थिक सुधार कार्यक्रम भी लागू किए गए हैं। अर्थव्यवस्था में दीर्घकालीन स्थिरता के आने से अब हम सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर का सही तरीके से अनुमान लगा सकते हैं, जिसके चलते हमारी आय और व्यय के अनुमान भी लगभग सही स्तर पर हो पा रहे हैं। इससे, विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर विश्वास लगातार बढ़ता जा रहा है और विदेशी निवेशक भी भारत की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

भारत के नागरिकों की जेब में सीधे पैसे डालने के बजाय सामाजिक आधारभूत संरचना खड़ी करने में सरकार ने नागरिकों की भरपूर मदद की है, जैसे 3 करोड़ से अधिक मकान बनाकर गरीब वर्ग को उपलब्ध कराए गए हैं, ग्रामीण इलाकों सहित घरों में पानी उपलब्ध कराया गया है, 95 प्रतिशत से अधिक गावों में बिजली उपलब्ध कराई गई है, लगभग सभी घरों में गैस उपलब्ध कराई गई है, सड़क मार्ग विकसित किए गए हैं, गांवों में स्वास्थ्य केंद्र खोले गए, आदि। इससे नागरिकों के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ और वे कम बीमार पड़ने लगे हैं, उनके स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्चे कम हुए हैं और उनकी बचत बढ़ी है। कुल मिलाकर यह साइकल बहुत अच्छे तरीके से अपना काम करता दिखाई दे रहा है। सामाजिक आधारभूत संरचना खड़ी करने का कार्य अभी भी जारी है और तेज गति से आगे बढ़ रहा है। इस सबका यह परिणाम भी हुआ है कि देश में पिछले 10 वर्षों में गरीबी आधी रह गई है और इसे शून्य पर लाने के लिए कार्य जारी है।

भारत में उत्पादों के निर्माण में आधारभूत संरचना से सर्बाधित लागत बहुत अधिक है। इस पर सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 14 प्रतिशत भाग खर्च हो जाता है, इससे उत्पादों की लागत तुलनात्मक रूप से बहुत बढ़ जाती है। हालांकि भारत के आधारभूत ढांचे को विकसित करने के लिए बहुत काम हुआ है। नए नए रोड बने हैं, रेल्वे का विकास हुआ है (रेल्वे का लगभग 100 प्रतिशत विद्युतीकरण हो चुका है), पोर्ट का विकास हो रहा है, नए एयर पोर्ट का निर्माण हुआ है, परंतु अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष हैं। वर्ष 2015 ने भारत में मालगड़ियां औसतन लगभग 20 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलती थीं। अब वह औसतन लगभग 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही हैं और आगे आने वाले 5 वर्षों में यह और आगे बढ़कर औसतन लगभग 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने लगेगी। इससे सबसे बड़ा लाभ उद्योग जगत को हुआ है, क्योंकि अब उन्हें कच्चे माल का स्टॉक कम मात्रा में रखना पड़ता है और इससे अंततः उनके द्वारा निर्मित उत्पाद की लागत कम हुई है।

पिछले कई वर्षों से विनिर्माण क्षेत्र की सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी लगातार कम होती रही थे अथवा स्थिर हो गई थी। परंतु, अब यह स्थिति भी बदलती जा रही है और आने वाले 5 वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी तेजी से बढ़ने जा रही है। इसके परिणाम कई क्षेत्रों जैसे सुरक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स, रेल्वे, फार्मा, औटोमोबाइल, ड्रोन निर्माण, सेमी कंडक्टर, फूड प्रासेसिंग, एयरो स्पेस, आदि में दिखाई भी देने लगे हैं।

भारत शेयर बाजार पूंजीकरण की दृष्टि से विश्व में आज अमेरिका, चीन, जापान, हांगकांग के बाद 5वें स्थान पर है। तीसरे स्थान पर शीघ्र ही आ सकता है। आगामी 10 वर्षों में बहुत सम्भव है कि भारत दूसरे स्थान पर भी आ जाए क्योंकि चीन और जापान के आर्थिक क्षेत्र में जिस प्रकार की समस्याएं दिखाई देने लगी हैं, इससे अमेरिका के बाद भारत विश्व में दूसरे स्थान पर आ सकता है। हालांकि सकल घरेलू उत्पाद की दृष्टि से विश्व में भारत तीसरे स्थान पर ही आ पाएगा। वर्तमान में भारत के शेयर बाजार का पूंजीकरण लगभग 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है जबकि भारत का सकल घरेलू उत्पाद लगभग 4 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का ही हो पाया है।

आगे आने वाले लगभग 10 वर्षों में भारत में 10 करोड़ नागरिक गरीबी से निकलकर मध्यम वर्गीय परिवार बन सकते हैं, जिससे इनकी कुल संख्या 45 करोड़ हो जाएगी। जबकि हाई नेटवर्थ नागरिकों की संख्या 50 लाख के आस पास ही है। इससे नागरिकों की खरीद क्षमता बढ़ेगी और उत्पादों की खपत भी बढ़ेगी। सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होने से गरीबी कम होती है। परंतु, महंगाई एवं विकास दर में संतुलन होना भी आवश्यक है। यदि मुद्रा स्फीति की दर बढ़ रही है तो यह गरीब वर्ग को सबसे अधिक प्रभावित करती है अतः विकास दर को कम रखने का प्रयास किया जाता है ताकि महंगाई की दर को कम किया जा सके। इसी नियम को विश्व के कई देश लागू कर रहे हैं इसीलिए वैश्विक स्तर पर विकास दर भी कम हो रही है। परंतु भारत में महंगाई की दर को नियंत्रण में रखने में सफलता मिली है इसीलिए भारत की विकास दर भी 7 प्रतिशत से ऊपर बनी हुई है। हालांकि यदि महंगाई को यदि और अधिक नियंत्रण में (लगभग 3 प्रतिशत) लाया जा सके तो भारत की आर्थिक विकास दर 8 से 9 प्रतिशत तक जा सकती है। भारत की आंतरिक अर्थव्यवस्था में किसी प्रकार की जोखिम दिखाई नहीं दे रही है परंतु भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए जोखिम केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक क्षेत्र में होने वाली समस्याओं के चलते ही हो सकती है।

गोलगप्पे में मिले कैंसर वाले केमिकल रोज खाई जाने वाले 5 चीजें भी बना देंगी कैंसर का मरीज

पानी पूरी या गोलगप्पा खाना भला किसे पसंद नहीं है। लेकिन आपको जानकर ताज्जुब होगा कि गोलगप्पा कैंसर पैदा करने वाले तत्व पाए गए हैं।

कैंसर का मरीज बना सकती है पानीपूरी खाने-पीने की चीजों पर नजर रखने वाली देश की सबसे बड़ी संस्था स्रस्रु ने पाया कि राज्य के 260 पानी पूरी के सैंपल में से 22% सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रहे। FSSA ने 79 स्थानों पर जांच की, जिनमें से 49 बेंगलुरु में थे। जांच में पाया गया कि 260 सैंपल में से 41 में आर्टिफिशियल कलर और संभावित रूप से कैंसर पैदा करने वाले रसायन पाए गए, जो उन्हें खाने के लिए असुरक्षित बनाते हैं। 18 अन्य सैम्पल भी खराब गुणवत्ता के पाए गए। गोलगप्पे में पाए गए हानिकारक रसायन गोलगप्पे में चटख नीला (ब्रिलियंट ब्लू), सूर्यास्त पीला (सनसेट यलो) और टार्टराज़ीन जैसे कई हानिकारक रसायन पाए गए हैं।

गंभीर बीमारियों का खतरा

हेल्थ एक्सपर्ट्स ने चेतावनी दी है कि इन पदार्थों का ज्यादा सेवन करने से पेट दर्द, हार्ट डिजीज और इम्यून सिस्टम कमजोर होना जैसी गंभीर बीमारियां हो सकती हैं।

पाचन बिगाड़ सकता है चटख नीला या ब्रिलियंट ब्लू

यह एक आर्टिफिशियल कलर है जिसका इस्तेमाल अक्सर खाने और कॉस्मेटिक उत्पादों में किया जाता है। ज्यादा मात्रा में खाने से त्वचा में एलर्जी, पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

सूर्यास्त पीला (सनसेट यलो) के खतरे

यह भी एक आर्टिफिशियल कलर है जिससे त्वचा पर लाल चकत्ते और खुजली जैसी एलर्जी हो सकती है। इससे पेट की तकलीफ भी हो सकती है। सरकारी संस्थाएं इसके इस्तेमाल में सावधानी बरतने की सलाह देती हैं।

टार्टराज़ीन के खतरे

यह पेट्रोलियम उत्पादों से बना एक आर्टिफिशियल कलर है जिसका इस्तेमाल खाने और पीने के पदार्थों को आकर्षक दिखाने के लिए किया जाता है। इससे एलर्जी, दमा और त्वचा पर रैशेज जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इससे भविष्य में कैंसर हो सकता है।

इन चीजों को खाने से हो सकता है कैंसर

प्रोसेस्ड फूड्स, रेड मीट, फाइड फूड्स, शुगरी बेवरेज, शराब, रिफाइंड फूड्स, साल्टेड फूड्स आदि के अधिक सेवन से भी कैंसर हो सकता है क्योंकि इनमें कैंसर वाले तत्व पाए जाते हैं।

स्पार्कलिंग वॉटर को कार्बन डाइऑक्साइड गैस को पानी में प्रेशर के साथ इंजेक्ट करके बनाया जाता है। इससे एक बबली ड्रिंक बनती है, जिसे स्पार्कलिंग वॉटर कहते हैं। कई सारे सेलिब्रिटीज इसे पीना पसंद करते हैं।

सेलिब्रिटीज को पसंद है स्पार्कलिंग वॉटर इस वजह से हो रहा फेमस

टी-20 वर्ल्ड कप की जीत के साथ विराट कोहली और अनुष्का शर्मा के फेवरेट स्पार्कलिंग वॉटर की भी खूब चर्चा हो रही है। अनुष्का शर्मा ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में स्पार्कलिंग वॉटर की बात की है। पानी पीना हमारे डेली रूटीन का जरूरी हिस्सा है। हम सभी इसके फायदों से परिचित हैं। हालांकि, पिछले कुछ सालों में स्पार्कलिंग वॉटर का ट्रेंड सेलिब्रिटीज के बीच काफी बढ़ गया है।

अलग- अलग फ्लेवर में आने के कारण लोग इसका स्वाद बेहद पसंद कर रहे हैं। इस तरह का बुलबुले वाला पानी आपने होटल्स में भी जरूर देखा होगा। खासतौर से जो लोग सोडा की लत छोड़ना चाहते हैं, उनके लिए यह सबसे अच्छा विकल्प है। तो आइए जानते हैं आखिर क्या होता है ये स्पार्कलिंग वॉटर और क्या हैं इसके फायदे, नुकसान।

क्या होता है स्पार्कलिंग वॉटर

स्पार्कलिंग वॉटर को कार्बोनेटेड वॉटर भी कहा जाता है। आम भाषा में इसे बुलबुले वाला पानी भी कहते हैं। इस पानी में कार्बनडाइ ऑक्साइड मिलाया जाता है। दरअसल, कार्बनडाइ ऑक्साइड गैस को पानी में प्रेशर से इंजेक्ट किया जाता है, जिस कारण पानी में बुलबुले उठने लगते हैं। इसे स्वादिष्ट बनाने के लिए नमक भी मिलाया जाता है। स्पार्कलिंग वॉटर में पोटेशियम बाइकार्बोनेट, सोडियम बाइकार्बोनेट और सोडियम साइट्रेट जैसे मिनरल्स भी मिलाए जाते हैं।

स्पार्कलिंग वॉटर के फायदे

- यह पानी प्यास बुझाने के लिए आर्टिफिशियल ड्रिंक से ज्यादा बेहतर है।
- अमेरिकन डेंटल एसोसिएशन के अनुसार, स्पार्कलिंग वॉटर दांतों के लिए अच्छा है।
- नॉन फ्लेवर्ड स्पार्कलिंग वॉटर आपको हाइड्रेट रखने में मदद करता है।
- स्पार्कलिंग वॉटर पीकर आप वजन कम कर सकते हैं।
- अगर आप सोडा का सेवन कम करना चाहते हैं, तो स्पार्कलिंग वॉटर अच्छा विकल्प है।
- इसे पीने के बाद पेट भरा हुआ महसूस होता है।

स्पार्कलिंग वॉटर के नुकसान

- इस पानी में एसिड की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे आपके इनेमल को नुकसान पहुंच सकता है।
- किसी भी तरह के फिजी ड्रिंक पीने के बाद सूजन और गैस बन सकती हैं।
- कुछ तरह के स्पार्कलिंग वॉटर में आट्रिफिशियल स्वीटनर का इस्तेमाल किया जाता है, जो सेहत के लिए अच्छे नहीं होते।
- फ्लेवर्ड स्पार्कलिंग वॉटर में सोडियम बहुत होता है, जो लोगों में हाइपरटेंशन का कारण बन सकता है।

कैसे चुनें सही स्पार्कलिंग वॉटर

मार्केट से स्पार्कलिंग वॉटर खरीदते समय ध्यान रखें कि इसमें चीनी और कैलोरी की मात्रा कम होनी चाहिए। इसके अलावा आप जो स्पार्कलिंग वॉटर खरीद रहे हैं, उसमें हाई फरुक्टोज कॉर्न सिरप, सोडियम, आर्टिफिशियल फ्लेवर, एस्पार्टेम और सुक्रालोज जैसे आर्टिफिशियल स्वीटनर न हों।

किन लोगों को नहीं पीना चाहिए स्पार्कलिंग वॉटर

जिन लोगों का ब्लड प्रेशर हाई रहता है या जो सूजन के प्रति संवेदनशील हैं, उन्हें स्पार्कलिंग वॉटर नहीं पीना चाहिए। इसके अलावा जिन लोगों को गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल इशू हैं, उन्हें कार्बोनेटेड वॉटर का सेवन करने की मनाही होती है।

स्पार्कलिंग वॉटर पीना सेफ है या नहीं

कई लोग बिना जानकारी के स्पार्कलिंग वॉटर पीना शुरू कर देते हैं, लेकिन वो नहीं जानते कि इसे पीना सेफ है भी या नहीं। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि स्पार्कलिंग वॉटर सादा पानी पीने के बराबर है। अगर आप नॉन फ्लेवर्ड स्पार्कलिंग वॉटर पी रहे हैं, तो बता दें कि इसमें शुगर और कैलोरी नहीं होती। ऐसे में इस पानी को पीना पूरी तरह से सेफ है।

हाई कोलेस्ट्रॉल से हैं परेशान तो खाना शुरू कर दीजिए ये 5 सब्जियां

हेल्दी हार्ट के लिए हेल्दी डाइट लेना जरूरी है। अगर आप चाहते हैं कि भविष्य में आप हार्ट के मरीज न बनें, तो इसके लिए आपको अपना कोलेस्ट्रॉल मेंटेन रखना भी बहुत जरूरी है। जिन लोगों का हाई कोलेस्ट्रॉल है, उन्हें अपनी डाइट में खास ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि ऐसे मरीजों में अटैक का खतरा बढ़ जाता है। बढ़े हुए हाई कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने के लिए कुछ सब्जियों का सेवन बहुत लाभकारी हो सकता है।

ये सब्जियां न केवल कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करती हैं, बल्कि हृदय रोग के खतरे को भी कम करती हैं। यहां जानते हैं कुछ ऐसी ही सब्जियों के बारे में, जो आपके हाई कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करेंगी।

बैंगन

बैंगन में फाइबर और कई तरह के एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो बेड कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कंट्रोल करने में मदद करते हैं। इसका सेवन पाचन स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है और यह कब्ज की समस्या में भी राहत देता है।

ब्रोकली

हार्ट के लिए ब्रोकली एक सुपरफूड है। ब्रोकली में उच्च मात्रा में फाइबर होता है, जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है, जिससे ब्लॉकेज का खतरा भी कम होता है।

लहसुन

लहसुन में एलिसिन नामक पावरफुल गुण पाया जाता है, जो कोलेस्ट्रॉल के लेवल कम करने में मददगार है। इसका सेवन ब्लड प्रेशर को भी कंट्रोल में रखता है।

पालक

पालक में ल्यूटिन, फाइबर और अन्य पोषक तत्व होते हैं जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करते हैं। इसमें मौजूद हाई एंटीऑक्सीडेंट आर्टीज में प्लाक जमने से रोकते हैं जिससे हृदय रोग का खतरा कम होता है।

अन्य सब्जियां

अधिक फाइबर युक्त सब्जियां, जैसे कि गाजर, टमाटर और ककड़ी में भी कई ऐसे गुण पाए जाते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती हैं।

बरसात के मौसम में भूलकर के भी न खाएं ये चीजें

बदलते मौसम के साथ हमारा खानपान भी बदल जाता है। जैसा कि मानसून आ गया है और बरसात के इस मौसम में कुछ खाद्य पदार्थों का सेवन सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। बरसात के दौरान इंफेक्शन का खतरा अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि इस मौसम में नमी और गंदगी के कारण बैक्टीरिया, वायरस और फंगल इंफेक्शन के पनपने का खतरा तेजी से बढ़ जाता है।

बरसात के मौसम में कुछ चीजें खाने से बचना चाहिए, नहीं तो आप इंफेक्शन के चपेट में आ सकते हैं और पाचन संबंधी कई दिक्कतें भी हो सकती हैं। इसलिए इस मौसम में कुछ सब्जियों, फलों और फूड के सेवन से बचना चाहिए। इसके अलावा कोशिश करें कि मौसम में तो खासतौर पर बहार का कुछ न खाएं। इन सभी बातों का ध्यान रखकर बरसात के मौसम में अपनी सेहत का ख्याल रखा जा सकता है। यहां कुछ ऐसे खाद्य पदार्थों के बारे में बताया गया है, जिसे मानसून में खाने बचना चाहिए।

फाइड फूड

बरसात के मौसम में नमी अधिक होती है, जिसके फाइड फूड हुए खाने से पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इस मौसम में वॉक या कई फिजिकल एक्टिविटी भी कम हो जाती है, जिसके कारण पेट में एसिडिटी और गैस की समस्या बढ़ सकती है।

हरी पत्तेदार सब्जियां

बरसात के मौसम में हरी पत्तेदार सब्जियों में बैक्टीरिया के पनपने का खतरा बढ़ जाता है। इन सब्जियों को अच्छी तरह से धोकर, पकाने के बाद भी कई बार बैक्टीरिया रह जाते हैं और जिसके कारण पेट का इंफेक्शन हो सकता है।

दूध और दूध से बने प्रोडक्ट

बरसात के मौसम में दूध से बनी चीजें जल्दी खराब हो जाती हैं। जिसके कारण फूड पॉइजनिंग का खतरा भी बढ़ जाता है। इसलिए दूध और दूध से बने उत्पादों से इस मौसम में दूर रहना चाहिए। बरसात के दौरान दही भी खाने से बचें।

सीफूड

बरसात के मौसम में सी फूड खाने से फूड पॉइजनिंग का खतरा बढ़ जाता है, क्योंकि इस मौसम में समुद्री जीवों में बैक्टीरिया और वायरस के फैलने का खतरा भी बढ़ जाता है।

कटे हुए फल

बरसात के मौसम में ज्यादा देर के कटे हुए फल बिल्कुल भी नहीं खाना चाहिए। क्योंकि कटे हुए फल में भी बैक्टीरिया पनप सकते हैं और फल जल्दी खराब हो जाते हैं, ऐसे में कटे हुए फल खाने से पेट की समस्याएं हो सकती हैं।

संक्षिप्त समाचार

प्रभु जगन्नाथ की रथयात्रा ग्राम गड़बेड़ा में 8 जुलाई को तैयारी जोरों पर

पिथौरा(समय दर्शन)। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी पिथौरा विकासखंड के ग्राम गड़बेड़ा में प्रभु जगन्नाथ जी की रथयात्रा धूमधाम से निकाली जाएगी। इस वर्ष पर्व 8 जुलाई को मनाया जाएगा, जिसे लेकर ग्राम पुजारी महाराज, ग्राम पंचायत,ग्राम विकास समिति ,ग्राम वासियों के द्वारा तैयारी जोरों से की जा रही है 8 जुलाई दिन सोमवार को प्रभु जगन्नाथ भगवान नंदीघोष रथ में सवार होकर ग्राम भ्रमण किया जाएगा। राधा कृष्ण मंदिर के पुजारी महाराज हेम सागर पंडा ने बताया नंदीघोष रथ का रंग रोगन सजावट कार्य किया जा रहा है। और रथ यात्रा के दिन रथ को बहुत ही आकर्षक तरीके से सुसज्जित किया जाएगा। रथयात्रा के दौरान ग्राम के विभिन्न समाज संगठनों द्वारा विभिन्न स्थानों पर प्रभु जगन्नाथ के रथ का भव्य रूप से स्वागत करते कीर्तन मंडलियों के द्वारा निकाली जाएगी प्राप्त सूचना अनुसार भगवान जगन्नाथ का रथ शाम को 4 बजे राधा कृष्ण मंदिर से ग्राम भ्रमण करते हुए मेला स्थल स्कूल चौक तक पहुंचेगी।

बिलासपुर स्थानीय निकाय चुनाव, भाजपा में उभर सकती है गुटबाजी

अमर के एकाधिकार को इस बार मिलेगी सीधी चुनौती

बिलासपुर (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जीत के बाद बिलासपुर जिले के राजनीतिक समीकरणों में बड़ा बदलाव आया था। उसके बाद लोकसभा चुनाव भाजपा प्रत्याशी तोखन साहू का जितना साथ ही केंद्र में शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री बन जाना। प्रदेश में डिप्टी सीएम स्थानीय निकाय मंत्रालय को भी होल्ड करते हैं। इन दोनों परिस्थितियों में बिलासपुर के स्थानीय निकाय चुनाव में प्रत्याशी चयन में किसकी चलेगी पर रोचक समीकरण बना दिया।

वर्ष 2001 के बाद बिलासपुर के स्थानीय निकाय चुनाव में बिलासपुर महापौर और पार्षद प्रत्याशी के चयन में अमर अग्रवाल के फैसले ही अंतिम होते थे। 2003 के बाद उनमें और अधिक एकाधिकार आते हुए सब ने देखा है। उमाशंकर जायसवाल, अशोक पिंगले, मंदाकिनी पिंगले, किशोर राय तक सिलसिला बगैर किसी चुनौती के चला। यहां तक की निगम सभापति और कार्यकारी महापौर विनोद सोनी उन्होंने ही चुना। 2023 विधानसभा चुनाव में अमर अग्रवाल विधायक तो बन गए पर उन्हें मंत्रिमंडल में स्थान नहीं मिला।

स्थानीय निकाय विभाग की कमान अरुण साव उपमुख्यमंत्री के हाथ में हैं। सांसद बिलासपुर शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री हैं। प्रथम दृष्टि में कोई कह सकता है कि दोनों आपसी सहमति से बिलासपुर, मुंगेली जिले में महापौर और पार्षद प्रत्याशी चुनेंगे। पर ऐसा लगता नहीं हाल ही में छत्तीसगढ़ उपमुख्यमंत्री ने शहरी विकास मंत्रालय के कैबिनेट मंत्री खट्टर से मुलाकात की, यह समाचार दैनिक अखबारों में खूब छापा। पर उसे मुलाकात में बिलासपुर के सांसद विभाग के राज्य मंत्री उपस्थित थे या नहीं इस पर समाचार मौन है। जिन्हें ऐसी मुलाकातों में कौन था कौन नहीं पर खूब राजनीति दिखती है वे भी दरबारी हो गए।

बिलासपुर नगर निगम सीमा में अन्य भाजपा विधायक जैसे बिल्हा से धरमलाल कौशिक, बेलतरा से सुशांत शुक्ला, तखतपुर से धर्मजीत सिंह की राय बिलासपुर महापौर चयन के लिए कितना अर्थ रखेगी यह देखने लायक रहेगी। भारतीय जनता पार्टी को अनुशासन वाली पार्टी कहा जाता है इस बार यह अनुशासन कैसे कायम होगा और अमर गुट जो अब तक लगातार पीछड़ रहा है वह निकाय चुनाव के मैच में कैसे अपनी शाख बचाएगा, देखने लायक रहेगा।

अजेय भारत व अन्य संगठन 7 जुलाई को करेगी वृक्षारोपण, कलेक्टर होंगी शामिल

दुर्ग। बहुआयामी संगठन अजेय भारत सामाजिक एवं धार्मिक संगठन,हॉकी एसोसिएशन एवं यूथ हॉस्टल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वाधान में 7 जुलाई को प्रात: 9 बजे सतरुपा शीतला मंदिर के सामने हॉकी ग्राउंड सिविल लाइंस में वृहद् वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जाएगा। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी। कार्यक्रम में गणमान्य नागरिक भी शामिल होंगे। इस संबंध में अजेय भारत सामाजिक एवं धार्मिक संगठन के प्रमुख संजय डहरवाल ने बताया कि वृक्षारोपण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण एवं लोगों को पेड़ लगाने प्रोत्साहित करना है। वृक्षारोपण के दौरान फलदार व छायादार पौधे रोपे जाएंगे। पौधों की सुरक्षा का आयोजन समिति के पदाधिकारियों द्वारा संकल्प भी लिया जाएगा।

खजुरी चेक डेम योजना मे घालमेल

तकनीकी और ठेकेदार ने मिलीभगत कर चुना लगाया

बलौदाबाजार (समय दर्शन)। जल के बिना जीवन की परिकल्पना ही अधूरी है, जल नहीं तो कुछ भी नहीं है। जल की जरूरत हर जीव जन्तुओं को है। यहां बनाए गए चेकडैम के कार्य की गुणवत्ता पर तो सवाल खड़ा हुआ जल संचय के लिए खजुरी में चेक डैम बनाने की योजना अनियमितता की भेंट चढ़ गई। इसका खुलासा ग्रामीण और मीडिया के संयुक्त के माध्यम से हुआ है। दरअसल खजुरी पंचायत में जल संचय के लिए विगत वित्तीय वर्ष में चेक डैम बनाने की योजना तैयार की गई। बारह लाख से अधिक की लागत से योजनाएं शुरू की गई। जल संचय के लिए बनने वाले चेक डैम निर्माण में बड़े पैमाने पर अनियमितता बरती गई है। जिसका लाभ क्षेत्र के लोगों को नहीं मिलेगा। यहां पेयजल की समस्या हमेशा बनी रहती है। खासकर गर्मी के दिनों में क्षेत्र में पानी को लेकर हाहाकार मच जाता है। प्रशासन द्वारा समस्या की गंभीरता को देखते हुए विभिन्न क्षेत्रों में पानी पहुंचाया जाता है।

मनरेगा के तहत किया गया निर्माण

कार्य का नाम चेक डेम निर्माण प्रशासकीय स्वीकृति राशि 12.29 लाख रु कार्य का मापन एवं इकाई 40मी *3मी कार्य प्रारम्भ तिथि 28अप्रैल 2024 व्यय राशि श्रमिक 2.97 लाख एवं सामग्री 9.32लाख श्रमिक दर दिवस 243रु तकनिकी सहायक का नाम रजनी कश्यप कार्यक्रम अधिकारी का नाम अविनाश पैकरा कार्य निर्माण एजेंसी का नाम ग्राम पंचायत खजुरी।

जलस्तर को नियंत्रित करने के लिए बनाई गई थीं योजना– विभाग के आधिकारिक जानकारी के मुताबिक ग्राम पंचायत खजुरी में अक्सर जल स्तर नीचे रहता है। पानी के स्तर को मेंटेन करने के साथ पानी की व्यवस्था के लिए चेक डैम बनाने की जो योजनाएं ली गई थी। उन पर लाखो रु खर्च किए गए हैं। निर्माण सही नहीं होने के चलते जिस उद्देश्य से योजना की गई थी वह पूरा नहीं हो पा रहा है। तकनिकी और ठेकेदार के मिलीभगत से मेहनत के विपरीत चेक डैम का निर्माण कराया गया जिसका कोई लाभ लोगों को मिलता नहीं दिख रहा है।

ग्राम पंचायत खजुरी मे चेक डेम निर्माण एवं फर्जी हाज़री के भ्रष्टाचार का मामला सामने आया है इस पर क्या कहेंगे

अगर अनियमितता की बात सामने आ रही है तो इसे जांच करा लेते है

दिव्या अग्रवाल
सीईओ जिला पंचायत
जिला बलौदाबाजार भाटापारा।

रोहित वर्मा एक ऐसा नायक जिसने अपनी मेहनत के दम पर सफलता की ऊंचाइयों को छुआ

राजनांदगांव (समय दर्शन)। जिद, जिजीविषा, जीवटता और जीवंतता एक साथ किसी एक आदमी में देखनी हो तो आपको राजनांदगांव जिले के एक छोटे से गांव कसारी में रहने वाले रोहित कुमार वर्मा के बारे में जरूर जानना चाहिए। एक ऐसा नायक जिसने अपनी मेहनत के दम पर सफलता की उन ऊंचाइयों को छुआ, जहां पहुंचना किसी के लिए भी सपने से कम नहीं है। बचपन में उन्हें बहुत सी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर जीवन सुनिश्चित करने के लिए वह हमेशा दृढ़ संकल्पित थे। आज अपनी मेहनत के बल पर वे मुख्य बीमा सलाहकार (भारतीय जीवन बीमा निगम) हैं तथा गैलेक्सी क्लब के सदस्य भी हैं और 6 बार एमडीआरटी भी रहे हैं।

मीडिया से बातचीत में रोहित वर्मा ने कहा कि अगर मैंने बचपन में संघर्ष और गरीबी का सामना नहीं किया होता तो मैं इस मुकाम तक नहीं पहुंच पाता। दरअसल विपरीत परिस्थितियां हमें मजबूत बनाने के लिए आती हैं। हमारी आजीविका खेती पर निर्भर थी। पिताजी अपनी अल्प आय में हमारी सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत करते थे, जब भी मैं उन्हें काम करते देखता, तो मेरी अंतरात्मा मुझे कुछ ऐसा करने के लिए कहती जिससे पूरे परिवार की गरीबी दूर हो सकें। 2015 में रोहित ने विकास अधिकारी संदीप जैन के मार्गदर्शन में जीवन बीमा निगम में सलाहकार के रूप में अपना करियर शुरू किया। यह उनके लिए एक नया और चुनौतीपूर्ण क्षेत्र था, लेकिन उन्होंने इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ मानते हुए कड़ी मेहनत की। शुरुआत में उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। ग्राहकों को समझाना और उन्हें जीवन बीमा के महत्व के बारे में बताना आसान नहीं था, खासकर ग्रामीण इलाकों में जहां लोगों को जीवन बीमा के बारे में जानकारी नहीं थी।

मैंने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि बिना मजबूत टीम के सफलता नहीं मिल सकती। मेरी पत्नी श्रीमती खेमेश्वरी वर्मा ऑफिस मेंटेनेंस का काम संभालती हैं और तीरथ साहू (मैनेजर), कामदेव साहू (कलेक्शन), डिलेश्वरी साहू (कंप्यूटर), कुमारी टेमेश्वरी मार्कंडेय (टेली कॉलिंग), ललिता साहू (कंप्यूटर), सुश्री खुशी वर्मा (सर्विस से जुड़ा काम) भी संभालते हैं। यहां कुशल प्रशिक्षित टीम हैं, जो तकनीकी समस्याओं का सटीक समाधान करते हैं। आज, रोहित वर्मा न केवल एक सफल जीवन बीमा सलाहकार हैं, बल्कि एक प्रेरणास्त्रोत भी हैं। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है कि यदि आप में दृढ़ निश्चय और मेहनत करने की इच्छा है, तो आप किसी भी कठिनाई को पार कर सकते हैं और अपने सपनों को साकार कर सकते हैं, उनका जीवन संघर्ष और सफलता की कहानी हमें सिखाती है कि कठिन परिस्थितियां केवल हमें मजबूत बनाती हैं और हमें हमारे लक्ष्य की ओर प्रेरित करती हैं।

परिसीमन को लेकर कांग्रेस संगठन सजग, बैठक पश्चात दिवंगत आत्माओं को दो मिनट की मौन श्रध्दांजलि दी

राजनांदगांव (समय दर्शन)। आगामी नगरीय निकाय चुनाव में सभी वार्डों में सामान्य जनसंख्या हो जिसको लेकर प्रदेश सरकार द्वारा जनसंख्या के आधार पर वार्डों का परिसीमन किया जा रहा है। इसी के तहत 4 जुलाई गुरूवार को शहर कांग्रेस द्वारा अति आवश्यक बैठक आयोजित कर रायशुमारी की गई।

शहर कांग्रेस कमेटी के महामंत्री अमित चंद्रवंशी ने विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि नगरीय निकाय चुनाव के पहले शासन द्वारा वार्डों का परिसीमन किया रहा है। इस हेतु शहर कांग्रेस कांग्रेस द्वारा गुरूवार 4 जुलाई को पूर्व मंत्री धनेश पाटिला की अध्यक्षता में स्थानीय कांग्रेस भवन में कांग्रेस पार्षद दल, छाया पार्षद व वरिष्ठ कांग्रेसजनों की आवश्यक बैठक आहूत कर परिसीमन के संबंध में चर्चा कर सुझाव मांगे, जिस पर सभी कांग्रेसजनों ने जनगणना कराने उसके बाद ही परिसीमन पर अपने सुझाव दिए, ताकि शहर की जनता को शासन की योजनाओं का लाभ मिल सके।

परिसीमन के संबंध में चर्चा करते हुए महापौर हेमा देशमुख ने कहा कि इस समय परिसीमन की आवश्यकता नहीं है, पहले जनगणना किया जाए उसके आधार पर जो-जो वार्ड बड़े व जनसंख्या अधिक है, वहां पर नए वार्ड बनाया जाए, ताकि शासन की योजना व मूलभूत आवश्यकताओं का लाभ प्रत्येक वार्डवासियों को मिल सके। इस बात पर सभी कांग्रेसजनों ने सहमति दी।

शहर कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर सिंह छाबड़ा ने कहा कि शासन द्वारा वर्ष 2021 में जनगणना किया जाना था, किन्तु कोरोना महामारी के चलते जनगणना नहीं हो पाई है। बिना जनगणना के वार्डों का परिसीमन संभव नहीं है, क्योंकि इससे कैसे पता चलेगा कि किस वार्ड में कितनी जनसंख्या है। कांग्रेसजन शासन से मांग करती है कि सबसे पहले तो जनगणना किया जाए, उसके बाद ही वार्डों का परिसीमन किया जाए, रही बात आगामी निकाय चुनाव की तो पुराने परिसीमन के आधार पर ही चुनाव कराया जाए। इस संबंध में पीसीसी को अवगत कराकर उचित मार्गदर्शन लेकर आगामी कार्ययोजना पर चर्चा करेंगे। बैठक पश्चात कांग्रेसजनों द्वारा पूर्व विधायक अग्नी चंद्राकर, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष व वरिष्ठ कांग्रेसी भंवरलाल टाटिया, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष दिनेश शर्मा के पुत्र विनय शर्मा, पार्षद संतोष पिल्ले की माता व पूर्व एल्डरमैन एजाजूर रहमान की पत्नी व लखोली निवासी कांग्रेस कार्यकर्ता पवन साहू को दो मिनट की मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

चर्चा के दौरान प्रमुख रूप से पूर्व मंत्री धनेश पाटिला, रमेश डाकलिया, मेहुल मारू, शारदा तिवारीए विकास त्रिपाठी, राजू खान, हनी ग्रेवाल, नरेश शर्मा, उत्तर ब्लॉक अध्यक्ष आसिफ अली, दक्षिण ब्लॉक अध्यक्ष सूर्यकांत जैन, सेवादल अध्यक्ष अमित खंडेलवाल, योगेन्द्र प्रताप सिंह, महिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती माया शर्मा, अब्बास खान, सुरेन्द्र देवांगन, पार्षद सिद्धार्थ डोंगरे, विनय झा, दुलारी साहू, महेश साहू, मनीष साहू, अजय छेदैया, एनएसयूआई अध्यक्ष अमर झा, अशोक फड्नवीस, प्रतिमा बंजारे, सुनील रामटेके, सचिन टूरहाटे, अवधेश प्रजापति, जागेश्वर साहू, सुरेन्द्र गजभिए, दीनू साहू, शेषनाथ, खिलेश बंजारे, विजय शर्मा, फरमान अली, पन्नालाल साहू, नरेन्द्र सिन्हा, जितेन्द्र सिन्हा सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित थे।

वार्डों की संख्या बढ़ने से लोगों की समस्या का होगा जल्दी समाधान प्रखर अग्रवाल

15 से बढ़कर 21 वार्डों की अब है सरायपाली में जरूरतः प्रखर अग्रवाल

सरायपाली (समय दर्शन)। नगर पालिका क्षेत्र सरायपाली में वर्तमान जनसंख्या को देखते हुए 15 वार्ड है जबकी आम जनता की समस्या देखते हुए वार्ड बढ़ाने की आवश्यकता संगम सेवा समिति के आकलन के हिसाब से अब सरायपाली नगर पालिका क्षेत्र में 15 वार्डों की जगह 21 वार्डों की आवश्यकता है जिसमें वार्ड क्रमांक 1 अंबेडकर वार्ड, वार्ड क्रमांक 3 , वार्ड क्रमांक 5, एवं वार्ड नंबर 7,8,9 झिलमिल वार्ड क्रमांक 13, 14 ,15 वार्डों में जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के हिसाब से पुन: परिसीमन कर नगर हित में वार्डों की संख्या बढ़नी चाहिए जिससे आम लोगों की समस्या का त्वरित समाधान हो सकेगा एवं वार्ड बढ़ने से शहर में जनप्रतिनिधित्व बढ़ेगा वहीं दूसरी ओर सरायपाली क्षेत्र से लगे हुए ग्रामीण क्षेत्र जो लगभग नगर क्षेत्र में आ चुके हैं उन्हें भी वार्डों की संज्ञा देकर नगर में जोड़ा जाना चाहिए जिससे ग्रामीण क्षेत्रो का समुचित विकास हो सकेगा उपरोक्त विषय में संगम सेवा समिति के संस्थापक प्रखर अग्रवाल द्वारा एसडीम को ज्ञापन दिया गया एवं प्रभारी मंत्री एवं नगरीय प्रशासन मंत्री को पत्र लिखा गया।

सारंगढ़ विधायक उत्तरी ने ग्रामवासियों के साथ पी0एच0ई0 व ठेकेदार के खिलाफखोला मोर्चा कोसीर मुख्य मार्ग पर किया चक्का जाम

नल जल योजना के अंतर्गत गांव-गांव में पाइपलाइन बिछाने ठेकेदार द्वारा खोदे गए सड़क से आवागमन बाधित

विधायक गृह ग्राम का मुख्य मार्ग में आवागमन ठप

पाइपलाइन बिछाने खोदे गए सड़क को मरम्मत नहीं करने से गांव गलियों में चलना हुआ दूभर

पी0एच0ई0 विभाग व तहसीलदार द्वारा लिखित आश्वासन के बाद चक्का जाम समाप्त

सारंगढ़ (समय दर्शन)। सारंगढ़ विधायक श्रीमती उत्तरी जांगड़े ने आज ग्राम वासियों के साथ एकाएक कोसीर सारंगढ़ मुख्य मार्ग के ग्राम रक्सा के पास चक्का जाम में बैठने से शासन प्रशासन के हाथ पांव फूल गए देखते ही देखते सैकड़ो की संख्या में ग्रामवासी सड़क के बीचो-बीच बैठकर पी0एच0ई विभाग व ठेकेदार के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करते हुए गांव गलियों में पाइपलाइन बिछाने के लिए खोदे गई सड़क को मरम्मत करने की मांग करने लगे उल्लेखनीय हो कि विधायक श्रीमती उत्तरी जांगड़े के गृह ग्राम मुड़वाभांठा का मार्ग भी पाइपलाइन बिछाने के कारण अवरुद्ध है जिसे लेकर विधायक द्वारा ठेकेदार को बार-बार बोलने के बाद भी मरम्मत नहीं किया जा रहा है जिसको लेकर विधायक ने कड़ी नाराजगी जाहिर की और ग्रामीणों के साथ चक्का जाम पर बैठ गए।यह खबर पुलिस प्रशासन और विभाग को हुई तो भागते-भागते सभी ग्राम रक्सा पहुंचे और चक्का जाम को खुलवाने विधायक से आग्रह करते रहे लेकिन ग्रामीणों ने जब तक ठोस आश्वासन नहीं मिलने पर चक्का जाम नहीं खुलने देने कहा इस तरह एक घंटे से अधिक कोसीर- सारंगढ़ मुख्य मार्ग में ग्राम रक्सा के पास चक्का जाम रहा जिससे दर्जनों दोपहिया व चार पहिया वाहन फंसे रहे इस तरह चक्का जाम की खबर सुनते ही कोसीर थाना प्रभारी चक्का जाम स्थल पहुंचे उन्होंने विधायक व ग्राम वासियों से चक्का जाम खुलवाने आग्रह किया लेकिन उन्होंने विभाग के अधिकारी को मौका पर बुलाने कहा जिस पर पी0एच0ई0 विभाग के एसडीओ व तहसीलदार आयुष तिवारी मौके पर पहुंचे उन्होंने कहा कि आपकी सभी मांगे पूरी की जाएगी आप हमें समय दे इस तरह मौके पर लिखित में तहसीलदार द्वारा पंचनामा तैयार कर ठोस अश्वासन दिया कि जो भी समस्याएं हैं उनका तुरन्त निराकरण किया जाएगा साथ ही बरसात के दिनों में ठेकेदार द्वारा पाइपलाइन बिछाने का कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा मांग पूरी होते ही विधायक और ग्राम वासियों न चक्का जाम को खोल दिए और आवागमन बहाल हुआ इस तरह आज हुए चक्का जाम से यह साफजाहिर है कि नल जल योजना के लिए पूरे छत्तीसगढ़ में पाइपलाइन बिछाने का कार्य जोर-शोर से जारी है ठेकेदारों द्वारा मनमाने तरीके से सड़के खोद दी जा रही है जिनके समय पर मरम्मत नहीं होने से आवागमन में लोगों को खाश कर स्कूली बच्चों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है समय रहते विभाग इस पर ठोस कदम नहीं उठाएगी तो इससे भी बड़ा आंदोलन की तैयारी क्षेत्रवासी करेंगे। इस अवसर पर प्रमुख रूप से जिला कांग्रेस अध्यक्ष अरुण मालाकार, विधायक प्रतिनिधि गनपत जांगड़े,जिला कांग्रेस महामंत्री विष्णु नारायण चन्द्रा,शिव टण्डन, युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष शुभम वाजपेई, एनएसयूआई अध्यक्ष अभिषेक शर्मा,युवा नेता राजेश भारद्वाज, सरपंच लाभ राम लहरे, भोला बर्मन,सनत चन्द्रा,खलेन्द्र भारद्वाज, रामसुख जांगड़े, नरेश बंजारे, एवं बड़ी संख्या में ग्राम वासी उपस्थित रहे।

इस संदर्भ में विधायक श्रीमती उत्तरी जांगड़े ने कहा कि नल जल पाइपलाइन बिछाने के लिए पी0एच0ई0 विभाग के ठेकेदारों द्वारा लगातार गांव गलियों को खोद दिया जा रहा है जिससे आवागमन बाधित है स्कूली बच्चे और ग्राम वासियों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है आज तो मेरी गाड़ी भी फस गई थी यही हाल पूरे छत्तीसगढ़ में हैं जब से भाजपा की सरकार आई है तब से केवल खोदने का काम कर रही है हम लोग सड़के बनवा रहे हैं और डबल इंजन की सरकार सड़क को तोड़ रहे हैं जिससे आमजन परेशान हैं साथ ही विभाग के अधिकारी एवं ठेकेदारों द्वारा की जा रही मनमानी को बर्दाश्त नहीं की जाएगी और समय रहते सड़के नहीं सुधरेंगे तो आगे भी आंदोलन की जाएगी।

खबर-खास

सैमसंग ने एआई-पावर्ड डिजिटल उपकरणों के लिए 'बीस्पोक एआई डेज़' ऑफर्स पेश किये

रायपुर। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज अपने बीस्पोक एआई-पावर्ड डिजिटल उपकरणों की रेंज पर शानदार ऑफर्स का एलान किया है। इन ऑफर्स के साथ, सैमसंग एआई को आम लोगों में लोकप्रिय बनाना चाहता है और अपने डिजिटल उपकरणों को ज्यादा से ज्यादा उपभोक्ताओं तक पहुंचाना चाहता है। सैमसंग के बीस्पोक उपकरणों की नई रेंज हमारे रोजमर्रा के काम को व्यवस्थित तरीके से संपन्न करने के लिए एआई का इस्तेमाल कर स्मार्ट जीवनशैली की सुविधा देती है। इससे यूजर्स अपने जीवन में अधिक सार्थक काम करने के लिए समय बचा पाते हैं, जो कम करो, बेहतर जिंदगी जियो (डू लेस, लिव मोर) के सिद्धांत के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। 5 जुलाई से अगले 10 दिनों के दौरान ग्राहक एआई-पावर्ड लिविंग के फायदों के बारे में जानने के लिए कंपनी के विशेष ऑफर्स का लाभ उठा सकते हैं। ये बीस्पोक एआई-पावर्ड उपकरण उपयोगकर्ताओं को इनकी सेटिंग्स को पर्सनलाइज करने, सभी उम्र के लिए उपयोगकर्ताओं के जरूरत के मुताबिक नियंत्रण प्रदान करने और अधिकतम कार्यक्षमता के लिए त्वरित निदान प्रदान करते हैं। सैमसंग इंडिया के डिजिटल अप्लायंसेज के सीनियर डायरेक्टर सौरभ बैशाखिया ने कहा बीस्पोक एआई के साथ, सैमसंग ने प्रीमियम ग्लोबल टेक्नोलॉजी को भारतीय उपभोक्ताओं तक पहुंचाया है। ये घरेलू उपकरण सभी उपभोक्ताओं को उनके जरूरत के मुताबिक विकल्प, आसान कंट्रोल, असाधारण सुविधा, ऊर्जा की बचत और अत्याधुनिक तकनीक प्रदान करते हैं।

थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (टीआईइटी) एवं एनवीडिया ने एमओयू साईन करने की घोषणा की

नईदिल्ली। थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (टीआईइटी) ने एनवीडिया (एनवीडिया) के साथ एक एमओयू साईन करने की घोषणा की, जिसके तहत एनवीडिया (एनवीडिया) एआई यूनिवर्सिटी प्रोग्राम के तकनीकी सहयोग से थापर स्कूल ऑफ एडवांस्ड एआई एंड डेटा साइंस (टीएसएऐएआई) की स्थापना की जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) दुनिया भर के उद्योगों में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है, इनोवेशन को बढ़ावा दे रही है, शिक्षा के भविष्य को नया रूप दे रही है और जीवन को बदल रही है। टीआईइटी और एनवीडिया के बीच एमओयू के तहत, थापर स्कूल ऑफ एडवांस्ड एआई एंड डेटा साइंस की स्थापना टीआईइटी के पटियाला कैंपस में की जाएगी। इस इनोवेटिव इनिशिएटिव का उद्देश्य छात्रों और संकाय दोनों को एआई कौशल और ज्ञान से सशक्त बनाने के लिए कॉम्प्रेहेंसिव एकेडमिक प्रोग्राम, रिसर्च ओपोर्चुनिटी और इनोवेशन प्रोजेक्ट प्रदान करना है। थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के निदेशक डॉ. पद्मकुमार नायर ने कहा, हम एनवीडिया के तकनीकी सहयोग से इस एआई स्कूल की स्थापना करने के अवसर को लेकर उत्साहित हैं। यह कार्य न केवल एआई विशेषज्ञता में अंतर को पाटेगा बल्कि इस परिवर्तनकारी क्षेत्र में अत्याधुनिक अनुसंधान और नवाचार का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। यह हमारे दृष्टिकोण को और भी सुदृढ करता है जो भविष्य के लिए तैयार छात्रों को शिक्षा प्रदान करने का है। एनवीडिया के एशिया साउथ के प्रबंध निदेशक विशाल धूपर ने कहा, ग्लोबल एआई एजुकेशन इनिशिएटिव में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में, थापर इंस्टीट्यूट पूरे भारत में एआई विशेषज्ञों की एक नई पीढ़ी को तैयार करने के लिए अत्याधुनिक एनवीडिया तकनीकों को एक साथ लेकर आएगा। नया एआई स्कूल एआई विशेषज्ञता में अंतर को पाटने में मदद करेगा और उद्योग में शानदार रिसर्च और इनोवेशन का रास्ता मजबूत करेगा। टीआईइटी जेनरेटिव एआईके विकास और तैनाती के लिए एनवीडिया छ्त्रङ्ग सिस्टम, एनवीडिया ॥100 टेंसर कोर जीपीयूह्य, एनवीडिया ,100 टेंसर कोर जीपीयू और एनवीडिया एआईएंटरप्राइज सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म का लाभ उठाते हुए अत्याधुनिक एआई इन्फ्रास्ट्रक्चर स्थापित करेगा। यह समर्पित डेटा केंद्र लगभग 8 टेराबाइट जीपीयू मेमोरी के साथ 227 पेटाफ्लॉप्स एआईप्रदर्शन प्रदान करेगा।

न्यायालय नायब तहसीलदार भिलाई-3 के न्यायालय मे मामला क्रमांक:202406104300110

//ईश्तहार//

विषयः- अ-6 अ
चरोदा (प.ह.न. 00009),
मामले की श्रेणीः- राजस्व
पक्षकारों का विवरण - आवेदक पक्षकार - शेख अहमद,
अनावेदक पक्षकार -
सनः- 2023-2024

एतद् द्वारा सर्व साधारण आम जनता को सूचित किया जाता है की आवेदक शेख अहमद पिता शेख इब्राहीम, निवासी- चरोदा के द्वारा आवेदन पेश किया गया है कि ग्राम- चरोदा, प.ह.नं. 09, तहसील भिलाई 03, जिला-दुर्ग (छ.ग.) में स्थित भूमि ख.नं. 332/4 का रकबा 0.012 हे. के स्थान पर रकबा 0.018 हे. त्रुटिवश दर्ज हो गया है। जिसे ख.नं. 332/4 का रकबा 0.018 हे. के स्थान पर रकबा 0.012 हे. सुधार किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है।

अतः उक्त प्रकरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को उजर दावा/आपत्ति हो तो वह स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से उपस्थित हो कर लिखित रूप में नियत दिनांक 24/07/2024 तक इस न्यायालय में दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 05/07/2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

नायब तहसीलदार
भिलाई 3, जिला- दुर्ग (छ.ग.)

जब से बनी है भाजपा सरकार, किसानों में है हाहाकार - रवि चंद्रवंशी

किसानों की समस्या 10 दिनों में दूर नहीं हुई, तो पंडरिया विधायक कार्यालय घेरेंगे।

कवर्धा (समय दर्शन)। आठ माह पहले हुए विधानसभा चुनाव में पंडरिया क्षेत्र की जनता में अधिकतम किसान परिवारों ने कांग्रेस की सरकार व विधायक की जगह भाजपा की सरकार व विधायक इस आस से चुन लिए कि शायद भाजपा व उसके विधायक कांग्रेस से बेहतर काम कर पाए। परन्तु विगत 8 महीनों की स्थिति को देखते हुए अब किसानों को पंडरिया विधायक चुनने का पछतावा होने लगा है। किसानों को लगने लगा है कि उनसे बड़ी भूल हो गई। वहीं 10 दिनों में समस्या दूर नहीं होने पर विधायक कार्यालय घेराव की चेतावनी दी गई है।

युवा किसान कांग्रेस नेता रवि चंद्रवंशी ने बताया कि जिस प्रकार आज किसान ओला वृष्टि क्षतिपूर्ति की राशि, गन्ना मूल भुगतान व बोनस की राशि, राजस्व विभाग का सुस्त रवैया सहित सोसायटी में खाद बीज नहीं मिलने से किसान परेशान हैं। आज हर एक किसान को अपने 8 महीने पहले किए गए फैसले पर दुःख हो रहा है।

श्री चंद्रवंशी ने कहा कि सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिस विधायक को किसानों ने बड़ी आस से चुना कि वह सर्व वर्ग हित मे काम करेंगी उनके द्वारा उल्टा ही काम किया जा रहा है। आज किसानों की समस्याओं को दूर करने के लिए उनके पास वक्त नहीं है। श्री चंद्रवंशी ने कहा कि पंडरिया विधायक जन सेवा ही भावना का टैग लाइन लिए चलती है। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि आप हमारे पंडरिया क्षेत्र के जिम्मेदार जनप्रतिनिधि है। आपको किसान भाइयों को तत्काल ओला वृष्टि की राशि का वितरण कराना चाहिए, शक्कर कारखाना में 7 महीनों से किसानों को गन्ने का भुगतान नहीं हुआ है इस पर आपको तत्काल किसानों को भुगतान कराना चाहिए और इनके साथ ही एक दीन राजस्व कार्यालय का दौरा कर आपको देखना चाहिए कि छोटी छोटी बातों के लिए किसान कितने दिनों से राजस्व विभाग के चक्कर काट रहे हैं। ऐसे किसानों की समस्या को दूर क्यों नहीं करनी चाहिए।

किसान नेता श्री चंद्रवंशी ने चेतावनी दी है कि 10 दिनों में पंडरिया विधायक द्वारा किसान हित में कार्य नहीं किया गया। किसानों की समस्याओं को दूर नहीं किया गया तो हजारों किसानों के साथ मिलकर कांग्रेस पार्टी द्वारा विधायक कार्यालय का घेराव किया जाएगा।

एक पेड़ मां के नाम' लगाने के आह्वान पर वृक्षारोपण

विभाग का आयोजन

दुर्ग। देश सहित प्रदेश में भी आम लोगों से 'एक पेड़ मां के नाम' लगाने के आह्वान पर वृक्षारोपण किया जा रहा है। इसी कड़ी में जिला वन मंडल दुर्ग द्वारा एक पेड़ मां के नाम से शुरुआत की गयी। दुर्ग जिला वन मंडल दुर्ग के इस आयोजन में जिले के प्रशासनिक, राजनैतिक के आलावा शिक्षण संस्थाओं के द्वारा इस मुहिम शामिल हो रहे है।

एक पेड़ मां के नाम इस मुहिम में शामिल हुए दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर, संभाग आयुक्त श्री सत्यनारायण राठौर, पुलिस महानिरीक्षक श्री राम गोपाल गर्ग, कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी, पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र शुक्ला, वन मण्डलाधिकारी श्री चंद्रशेखर परदेशी, एस.डी.ओ. श्री डी.के. सिंह, कमिश्नर रिसाली निगम श्रीमती मोनिका वर्मा, रेंजर हफ़िज़ खान कालेज के प्राचार्य, प्रोफेसर, विद्यार्थियों सहित अन्य प्रकृति प्रेमी संस्थान एवं विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के मौजूदगी में दुर्ग जिले के धनोरा स्थित आत्मानंद कालेज परिसर में एक पेड़ मां के नाम लगाकर जिले में अभियान की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम का आयोजन वनमंडल दुर्ग ने किया। इस दौरान दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर ने कालेज विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने के लिए एक पेड़ अपनी मां के नाम लगाने की अपील भी की है। इसके साथ ही जिले सभी स्कूलों, हॉस्पिटल और आंगनबाड़ियों में अभियान चलाकर वृहद वृक्षारोपण करने के निर्देश भी दिये। विधायक श्री ललित चंद्राकर ने कहा है कि एक पेड़ मां के नाम के आह्वान से बच्चों का पर्यावरण से जुड़ाव बढ़ेगा। इसमें पालकों और शिक्षकों को शामिल करने से निश्चित ही बड़े पैमाने पर पौधारोपण हो सकेगा। एक पेड़ मां के नाम अभियान की शुरुआत सभी लोग मां के नाम पर पेड़ लगाएंगे इसलिए इसकी देखरेख और रखरखाव की जिम्मेदारी सुनिश्चित होगी। ऐसे कॉलेज परिसर जहां अहाता है, उनके किनारे-किनारे छायादार पेड़ जैसे नीम, गुलमोहर, करंज, अशोक, अर्जुन लगाए जाने के निर्देश दिए हैं। आपको बता दें कि इस अभियान से विद्यार्थी, शिक्षक और पालक अपने लगाए गए पौधे को वृक्ष बनते तक पालन पोषण एवं सुरक्षा करेंगे। पौधारोपण के लिए उचित ऊंचाई के पौधे वन विभाग से प्राप्त किया जाना सुनिश्चित करने कहा गया है। पौधारोपण करने के लिए उचित मापदण्ड के गड्ढे और खाद की भी व्यवस्था करने के निर्देश वन विभाग को दिए गए हैं। विद्यालयों में पौधारोपण के दौरान जन प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया जाएगा। पौधारोपण के समय शिक्षक और छात्र-छात्राओं से पौधों को सुरक्षित रखने बाबत् शपथ ग्रहण भी कराएं जाने के निर्देश दिए गए हैं। सभी अधिकारी कर्मचारी भी परिसर में एक पेड़ अपनी मां के नाम पर रोपण किया।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मन की बात के 111वें एपिसोड में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर एक पेड़ मां के नाम अभियान शुरू किया। इस दौरान पीएम मोदी ने अपील की सभी लोग एक पेड़ अपनी मां के नाम पर जरुर लगाएं। क्योंकि दुनिया का सबसे अनमोल रिश्ता मां का होता है। हम सबके जीवन में मां का दर्जा सबसे ऊंचा होता है। मां हर दुख सहकर अपने बच्चे का पालन पोषण करती है। हर मां अपने बच्चे पर हर स्नेह लुटाती है। जन्मदात्री मां का ये प्यार हम सब पर एक कर्ज की तरह होता है जिसे कोई चुका नहीं सकता। मां के सम्मान में लगाएं एक पेड़ रूपीएम मोदी इसके लिए विश्व पर्यावरण दिवस पर एक खास अभियान शुरू किया। इस अभियान का नाम-एक पेड़ मां के नाम है। इस अभियान के तहत पीएम मोदी ने भी एक पेड़ मां के नाम पर लगाया है। साथ ही देशवासियों से दुनिया के सभी देशों के लोगों से ये अपील की है कि अपनी मां के साथ मिलकर या उनके नाम पर एक पेड़ जरूर लगाएं। इस अभियान के बाद मां की स्मृति और उनके सम्मान में पेड़ लगाने का सिलसिला तेजी से बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय योग स्पोर्ट्स चैंपियनशिप में सनावी सिंह का चयन

दुर्ग। दामिनी योगा एंड वेलनेस की स्टूडेंट सनावी सिंह (10 वर्ष) भिलाई की होनहार बेटी का चयन राष्ट्रीय योग स्पोर्ट्स चैंपियनशिप मुंबई के लिए हुआ है। सनावी सिंह मुंबई रवाना हुई, सनावी सिंह केंद्रीय विद्यालय दुर्ग की कक्षा पांचवी की छात्रा है। वर्तमान दामिनी योगा एंड वेलनेस में योग प्रशिक्षका दामिनी साहू से योग प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। 7 जून को रायपुर में आयोजित राज्य स्तरीय योग स्पोर्ट्स प्रतियोगिता में क्वालीफाई होकर जो कि अंतर्राष्ट्रीय योग स्पोर्ट्स फेडरेशन के तत्वाधान में हुआ था। इन्होंने अपना स्थान राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता के लिए बनाया। सनावी सिंह को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जीतने के लिए सराहना मिल रही है।

एयर कूलर सेगमेंट के दिग्गरज केनस्टार ने अब बड़े अप्लायंसेज को लॉन्च किया

रायपुर। केनस्टार ने प्रतिष्ठित हयात मानेसर में अपने सालाना व्यावसायिक सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें 1000 से अधिक पार्टनर्स शामिल हुए। इस एक दिवसीय कार्यक्रम के दौरान कंपनी ने भविष्यं में की जाने वाली साझेदारियों एवं भावी योजनाओं पर चर्चा की। बिजनस ईयर 2023-24 की बेमिसाल उपलब्धियां- 2023-24 का कारोबारी साल केनस्टार के लिए उपलब्धियों वाला वर्ष रहा। कंपनी 55 प्रतिशत ग्रोथ के साथ 130 प्रतिशत का टारगेट हासिल करने में सफल रही। अपने संबोधन भाषण में, केनस्टार के सीईओ श्री सुनील जैन ने केनस्टार की क्षेत्रीय और वैश्विक सफलताओं का जिक्र करते हुए कहा, हम पूरे दक्षिण क्षेत्र में नेतृत्वक कर रहे हैं और हमने कर्नाटक में अपनी नंबर 1 पोजीशन को फिर से हासिल कर लिया है। पूर्वी और पश्चिमी बाजारों में हमारा प्रभुत्व जारी है, साथ ही ओडिशा और पश्चिम बंगाल में भी हमारी स्थिति मजबूत हुई है। उत्तर भारत में बड़े कूलर की मांग बढ़ रही है। इस क्षेत्र में अग्रणी स्थिति हासिल करने की हमारी यात्रा बेहद सफल रही है। इन उपलब्धियों के साथ, हम देश में नंबर 1 एयर कूलर ब्रांड बनने की राह पर हैं। हमने मौजूदा दौर के ग्राहकों की ज़रूरतों के साथ तालमेल बनाए रखा है। हमने अपना ऑनलाइन ई-कॉमर्स और बड़े फॉर्मेट का सिलसिला जारी रखा है। कुछ ही वर्षों में, हम पहले से ही ई-कॉमर्स और बड़े फॉर्मेट दोनों चैनलों पर देश में सबसे तेज़ी से बढ़ने वाले ब्रांड्स में से एक हैं।

//आम सूचना//

कार्यालय रिटर्निंग अधिकारी नवीन प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता भंडार मर्या. संजय नगर वार्ड-32, न्यू खुर्सीपार, भिलाई पं. क. 2379 जिला दुर्ग

राज्य सहकारी निर्वाचन आयोग, छत्तीसगढ़ द्वारा आदेश क्र/रा.स.नि.आ. / निर्वाचन/डी.आर.जी.-134/2024/160 दिनांक 15.02.2024 के परिपालन में संस्था नवीन प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता भंडार मर्या. संजय नगर वार्ड 32 न्यू खुर्सीपार, भिलाई, पं. क्र. 2379, जिला दुर्ग के निर्वाचन हेतु रिटर्निंग अधिकारी श्रीमती स्वाति खोब्रागड़े द्वारा आज दिनांक 04.07.2024 को संस्था के संचालक मंडल के निर्वाचन हेतु निर्वाचन कार्यक्रम जारी किया गया है। निर्वाचन कार्यक्रम अनुसार दिनांक 11.07.2024 को नामांकन फार्म लिये जावेंगें एवं प्राप्त फार्म की जांच की जावेगी। दिनांक 12.07.2024 को नाम वापसी, चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सूची का प्रकाशन व चुनाव चिन्ह आबंटन किया जावेगा। दिनांक 19.07.2024 को विशेष साधारण सभा द्वारा संचालक मंडल का चुनाव करवाया जावेगा एवं उसी दिवस मतगणना भी की जावेगी। दिनांक 24.07.2024 को अध्यक्ष उपाध्यक्ष एवं अन्य समितियों के प्रतिनिधियों का निर्वाचन कराया जावेगा।

(स्वाति खोब्रागड़े)
रिटर्निंग अधिकारी
नवीन प्राथ. सहकारी उपभो. भंडार मर्या., संजय नगर, वार्ड-32 न्यू खुर्सीपार भिलाई पं.क. 2379 जिला-दुर्ग

न्यायालय तहसीलदार भिलाई-3 के न्यायालय मे मामला क्रमांकः 202402101600045

//ईश्तहार//

मामले की श्रेणीः- राजस्व
विषयः- अ-6
कुम्हारी प.ह.न. 00012 [(हे.)]
पक्षकारों का विवरण - आवेदक पक्षकार -रक्षा चावड़ा,
अनावेदक पक्षकार -ईश्वरलाल राठौर,

एतद द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सुचित किया जाता है कि आवेदक रक्षा चावडा, पिता जयेश चावडा निवासी कुम्हारी, तह. भिलाई 3, जिला द्वर्ग छ.ग. के द्वारा मौजा ग्राम कुम्हारी प.ह.नं. 12 रा.नि.मं. कुम्हारी जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नं 359/373 रकबा 0.0325 हे. को अनावेदक विक्रेता ईश्वर लाल राठौर पिता राम जी राठौर से पंजीकृत बयनामा दिनाँक 15.12.2023 को क्रय किये जाने उपरांत प्रमाणीकरण किये जाने बाबत् मय आवेदन भूईया के माध्यम से ई कोर्ट में लिया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति संस्था को कोई उजर / दावा हो तो स्वयं अथवा अपने विधि मान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति नियत दिनांक 10/07/2024 को इस न्यायालय में पेश कर सकते है।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 18/06/2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

तहसीलदार
भिलाई 3, जिला- दुर्ग (छ.ग.)

नेक्स्ट भारत वेंचर्स : सुजुकी की पहल, भारत के उद्यमियों को सशक्त बनाने और नेक्स्ट बिलियन भारतीयों की समस्याओं का समाधान करने के लिए 340 करोड़ रुपये का फंड लॉन्च

रायपुर। नेक्स्ट भारत वेंचर्स ढ्ढस्नस्ष्ट प्राइवेट लिमिटेड ङ्क सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन की एक सहायक कंपनी ने 340 करोड़ रुपये के फंड की शुरुआत की घोषणा की, जिसका उद्देश्य भारत में सोशल इम्पैक्ट स्टार्टअप इकोसिस्टम के लिए विकास कैटेलिस्ट के रूप में कार्य करना है। नेक्स्ट भारत एक सोशल इम्पैक्ट इन्वेस्टमेंट फंड है जो ऐसे प्रभावशाली उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है जो टियर ढ्ढ्ढ और उससे नीचे के भौगोलिक क्षेत्रों के लिए वैलयू निर्माण कर रहे हैं। नेक्स्ट भारत का उद्देश्य इन प्रभावशाली उद्यमियों का समर्थन करके भारत के अगले अरबों को सशक्त बनाना है। इसका प्राथमिक मिशन देश में प्रभावशाली लोगों के एक समुदाय को विकसित और उसका पोषण करना है, जो स्थायी व्यवसाय के साथ सामाजिक समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। कंपनी की प्रमुख पहल, 'नेक्स्ट भारत रेजीडेंसी प्रोग्राम' में शुरुआती चरण के उद्यमियों के लिए 4 महीने की इमर्सिव रेजीडेंसी शामिल है। रेजीडेंसी प्रोग्राम के लिए आवेदन अब शुरुआती चरण के सभी प्रभावशाली उद्यमियों के लिए खुले हैं। आवेदन प्रक्रिया समावेशी है, जिसमें व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक आसान आवेदन प्रारूप है, जिसमें अधिकतम 2-सप्ताह के आवेदन समीक्षा समय के साथ व्हाट्सएप-आधारित सबमिशन शामिल हैं।

।। न्यायालय नजूल जांच अधिकारी, दुर्ग (छ.ग.) ।।

//ईश्तहार//

रा.प्र.क. / 17 /अ-20(4)/ वर्ष 2023-24

आवेदक एस.एन.बोस आ. स्व. नगेन्द्र नाथ बोस निवासी आमदी नगर हुडको भिलाई के द्वारा इस आशय का आवेदन प्रस्तुत किया है कि आमदी नगर हुडको भिलाई में स्थित भूमि खसरा नं. 1/2, 2/2 का टु. प्लाट नं. एम.आई.जी 2/453 रकबा 160 वर्गमीटर धारक एस.एन.बोस आ. स्व. नगेन्द्र नाथ बोस निवासी आमदी नगर हुडको भिलाई के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूखण्ड के पट्टे की वैधता मार्च, 2038 तक है। आवेदक द्वारा उक्त भूखण्ड को क्रेता सौरभ दत्ता आ. अशोक कुमार दत्ता निवासी आमदी नगर हुडको भिलाई के पास विक्रय करने हेतु इकरारनामा निष्पादित किया है। आवेदक द्वारा उक्त भूखण्ड के विक्रय करने की अनुमति बावत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतएव एतद् द्वारा सर्व साधारण एवं आम जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को दावा या आपत्ति हो, तो प्रकरण की सुनवाई दिनांक 24.07.2024 को या इसके पूर्व इस न्यायालय में स्वतः या किसी व्यक्ति अथवा अधिवक्ता के द्वारा जिसे भू-खंड संबंधी जानकारी हो आवश्यक अभिलेख प्रस्तुत किया जावे अथवा करवाया जावे। नियत तिथि पश्चात प्राप्त आक्षेप/आपत्ति पर कोई कार्यवाही नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 02.07.2024 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा से जारी किया गया।

मुहर

नजूल जांच अधिकारी,
दुर्ग

।। न्यायालय नजूल जांच अधिकारी, दुर्ग (छ.ग.) ।।

//ईश्तहार//

रा.प्र.क.//23/अ-20 (3) / वर्ष 2023-24

आवेदक हरीश गावरी आ. स्व. राजाराम गावरी वार्ड 26 लाभ काम्प्लेक्स स्टेशन रोड दुर्ग द्वारा इस आशय का आवेदन प्रस्तुत किया है कि दुर्ग स्थित नजूल भूमि शीट के. 88 ए प्लाट नं. 4/2 क्षेत्रफल 604 वर्गमीटर भूमि धारकगण इन्द्रजीत, संजय पिस. सुदामा लाल कुकरेजा नि. सिंधी कालोनी के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। धारकगण द्वारा उक्त भूखण्ड पंजीकृत बैनामा दिनांक 13.06.2024 द्वारा आवेदक हरीश गावरी को विक्रय किया है। आवेदक द्वारा उक्त पंजीकृत बैनामा के आधार पर उक्त क्रयशुदा भूखण्ड से धारक का नाम नजूल अभिलेख से विलोपित कर स्वयं का नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतएव एतद् द्वारा सर्व साधारण एवं आम जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को दावा या आपत्ति हो, तो प्रकरण की सुनवाई दिनांक 24.07.2024 को या इसके पूर्व इस न्यायालय में स्वतः या किसी व्यक्ति अथवा अधिवक्ता के द्वारा जिसे भू-खंड संबंधी जानकारी हो आवश्यक अभिलेख प्रस्तुत किया जावे अथवा करवाया जावे। नियत तिथि पश्चात प्राप्त आक्षेप/आपत्ति पर कोई कार्यवाही नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 01.07.2024 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा से जारी किया गया।

मुहर

नजूल जांच अधिकारी
दुर्ग

भारतीय थल सेना
JOIN INDIAN ARMY AS AN OFFICER
www.joinindianarmy.nic.in

अधिकारी प्रविष्टियाँ

1. निम्नलिखित कोर्सों के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं :-
   (क) 64वाँ अल्पसेवा कमीशन (तकनीकी) कोर्स (पुरूष) एवं 35वाँ अल्पसेवा कमीशन (तकनीकी) कोर्स (महिला) अप्रैल 2025 के लिए।
   (ख) 34वाँ अल्पकालिक सेवा कमीशन जे.ए.जी. कोर्स अप्रैल 2025 कानून में स्नातक पुरूष एवं महिला अभ्यर्थियों के लिए।
   (ग) 57वाँ अल्पसेवा कमीशन एन.सी.सी. विशेष भर्ती कोर्स (पुरूष एवं महिला) (युद्ध में हताहत सेना कार्मिकों के आश्रितों सहित) अप्रैल 2025 के लिए।
2. ऑनलाइन आवेदन निम्नलिखित अवधि तक खुले रहेंगे:-
   (क) अल्पकालिक सेवा कमीशन (तकनीकी) कोर्स - पुरूष एवं महिला - 16 जुलाई से 14 अगस्त 2024
   (ख) जे.ए.जी. कोर्स - पुरूष एवं महिला - 15 जुलाई से 13 अगस्त 2024
   (ग) एन.सी.सी. विशेष भर्ती कोर्स - पुरूष एवं महिला - 11 जुलाई से 09 अगस्त 2024

OFFICER ENTRIES

1. Applications are invited for the following courses:-
   (a) 64th Short Service Commission (Tech) Men Course and 35th Short Service Commission (Tech) Women Course Apr 2025.
   (b) 34th Short Service Commission JAG Entry Scheme Course (Men & Women) Apr 2025 course for Law Graduates.
   (c) 57th Short Service Commision NCC Special Entry Scheme Course Apr 2025 for Men & Women (including Wards of Battle Casualties of Army personnel).
2. Online applications will open as under:-
   (a) SSC (Tech) Course - Men & Women - 16 Jul to 14 Aug 2024
   (b) JAG Course - Men & Women - 15 Jul to 13 Aug 2024
   (c) NCC (Special) Course - Men & Women - 11 Jul to 09 Aug 2024

नोट :-
1. सेना में भर्ती पूर्णतया पारदर्शी और मुफ्त है। दलालों से सावधान रहें।
2. विस्तृत नोटिफिकेशन और जानकारी के लिए, कृपया www.joinindianarmy.nic.in पर जाएं।

Note :-
1. Recruitment in the Army is totally transparent and free. Beware of touts.
2. For detailed Notification, please visit www.joinindianarmy.nic.in.

cbc 10601/11/0023/2425

संक्षिप्त-खबर

राधाकृष्ण मंदिर समिति एवं राइस मिल उद्योग के संयुक्त तत्वधान मे किया गया पौधरोपण

दुर्ग (समय दर्शन)। एसोसिएशन की ओर से राधा कृष्ण मंदिर समिति से चर्तुभुज राठी एवं राइस मिल उद्योग विनीत जैन, अंशुल चांडक के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण, पशु पक्षी के संरक्षण एवं मानवीय संवेदना को ध्यान में रखते हुए भावी पीढ़ी को स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने में सहायक होने की दृष्टि से वृक्षारोपण अभियान के तहत 7 ग्रामों के निवासियों को 4000 नग पौधे वन विभाग के सौजन्य से निःशुल्क उपलब्ध कराने में पूरी मदद की है। महत्वपूर्ण बात यह है कि विनीत जैन की प्रेरणा से ये पौधे निजी, सुरक्षित स्थान पर लगाए जा रहे हैं ताकि पशुओं से उनका संरक्षण आसानी से होता रहे। अहिवारा - मुरमुंदा क्षेत्र में वृक्षारोपण हेतु गोढ़ी चेटुआ, मोंहदी, मुरमुंदा, कंडरका, बोरसी, अछोटी गांव, एवं अभ्युदय संस्थान परिसर, अभिभावक विद्यालय परिसर,अछोटी पौधे वितरण हेतु चयन किए जा चुके है। इसमें से शुरुआत के 3 गांव में जन भागीदारी से कार्य संपन्न हो गया है शेष में होने वाला है इसमें आप सभी भागीदारी करें तो हार्दिक प्रसन्नता होगी । इस पुनीत कार्य में जिनका सहयोग प्रमुखता से प्राप्त हुआ है उनमें राइस मिल एसोसिएशन की ओर से चतुर्भुज राठी, विनीत जैन, वन विभाग दुर्ग की ओर से डीएफओ चंद्रशेखर एवे स्टाफ सभी ग्राम पंचायत के पंच - सरपंच , एवम ग्रामवासी , अभिभावक विद्यालय एवं अभ्युदय संस्थान परिवार की ओर से डॉ संकेत ठाकुर , चंद्रशेखर राठौर, मनजीत, अमित भाई, जगदेव अग्रवाल एवं अनेक स्वजनों का सहयोग मिला।

निलेश राकंपा अजीत गुट के यूथ प्रदेश अध्यक्ष

बिलासपुर। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अजीत पवार गुट ने अपनी यूथ इकाई के 18 प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति की है। छत्तीसगढ़ की कमान निलेश बिसवास को मिला अब वह राष्ट्रीय यूथ कांग्रेस के छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष बन गए।

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के पहले वे लंबे समय राकंपा अविभाजित के प्रदेश प्रवक्ता थे। महाराष्ट्र राकंपा के सियासी बवाल के समय भी वे शरद पवार को ही अपना नेता बताते रहे। लोकसभा चुनाव के समय भी उन्होंने बिलासपुर में कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी के समर्थन में इंडिया गठबंधन का धर्म निभाया। अब वे अजीत पवार की पार्टी में यूथ प्रदेश अध्यक्ष बन गए।

बच्चों के शैक्षिक गुणवत्ता परखना ज़रूरी

शंकर लहरे/ बागबाहरा (समय दर्शन)। बच्चों के शैक्षिक गुणवत्ता को परखने एवं शिक्षकों के अध्यापन कार्य की मॉनिटरिंग करने के लिए विकासखंड बागबाहरा के अधिकारीद्वय बीईओ केके वर्मा व एबीईओ रामता मन्ना डे ने विकासखण्ड के सुदूरवर्ती संकुल केंद्र डूमरडीह,टेका,बोकरामुड़ा के स्कूलों का औचक निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान अधिकारीद्वय ने शिक्षकों के समय पर स्कूल न पहुंचने के संबंध में कड़ाई से शाला समय पालन करने का निर्देश दिया।प्राथमिक शाला डूमरडीह,चोरभट्टी, मोहन्दी,गाड़ाघाट,भारतपारा, टेका टुहलु, बोकरामुड़ा कला,सहित उच्च प्राथमिक शालाओं में मध्यान भोजन व्यवस्था, कार्यालयीन दस्तावेजों के संधारण, संसाधनों का रख रखाव, मूलभूत सुविधा इत्यादि का भी निरीक्षणकर्ता ने अवलोकन किया।विकासखण्ड शिक्षाधिकारी बागबाहरा केके वर्मा ने शाला समय का कड़ाई से पालन न करने वाले शिक्षकों पर सख्त कार्यवाही के संकेत दिये है।साथ ही शिक्षको को विद्यार्थियों में न्यूनतम शैक्षिक स्तर लाने का प्रयास करने का निर्देश दिया है।सभी विद्यालयों को पौधरोपण करने हेतु आग्रह किया।निरीक्षण के दौरान एबीईओ रामता मन्ना डे ने परिसर के भीतर उपलब्ध स्थानों पर किचन गार्डन बनाने व उपलब्ध स्थानों पर विभिन्न प्रकार के सब्जियों के बीजारोपण करने,परिसर में स्थित रसोई कक्ष की विधिवत साफसफाई कराकर मध्यान्ह भोजन की सभी सामग्रियों को साफसुथरा व व्यवस्थित करने,उपस्थित रसोईयों को भोजन बनाने व परोसने में सफाई का विशेष ध्यान देने तथा सभी स्कूलों को प्रवेशोत्सव पखवाड़ा के दौरान अभिभावकों से सम्पर्क करके अधिक से अधिक बच्चों का नामांकन करने के निर्देश दिये।प्राथमिक शाला चोरभट्टी में बच्चों की शैक्षिक स्तर अच्छा पाये जाने की तारीफ की तथा सुव्यवस्थित व स्वच्छ शाला परिसर की सराहना की।

हिन्दू देवी देवता को हिंसक कहने के विरोध में विश्व हिन्दू बजरंग दल द्वारा राहुल गांधी का पूतला फूंका

बसना(समय दर्शन)। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल बसना प्रखंड के द्वारा दिनांक 4. 7.2024 दिन गुरुवार को शाम 5:00 बजे शहीद वीर नारायण चौक बसना में राहुल गांधी का पुतला दहन किया गया।

ज्ञात हो कि, राहुल गांधी ने भरी संसद भवन में शिव जी का फोटो लेकर आया और अपने बयान में कहा कि हिंदू देवी, देवता हिंसक होते हैं? उनके पास शस्त्र होता है ,हिंदू हमेशा डर फैलाते हैं ,हिंदू हिंसक होते हैं ? जैसे कई अनर्गल बातें हिंदू समाज ,हिंदू धर्म के प्रति कहा ? जिसके विरोध मे

हिन्दू समाज आक्रोसित होकर छत्तीसगढ़ के सभी प्रखंडों और ग्रामों में राहुल गांधी का पुतला दहन किया जा रहा है। इस तारतम्य में बसना के मुख्य चौक शहीद वीर नारायण सिंह चौक में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के सैकड़ो कार्यकर्ता एकत्रित होकर जुलूस निकालकर राहुल गांधी का पुतला जलाया गया।

इस दौरान विश्व हिन्दू परिषद के जिलाध्यक्ष सौरव अग्रवाल ने कहा कि,हिन्दु धर्म के प्रति राहुल गांधी का दृष्टिकोण हमेशा से घृणित रहा है ,वह बयान देता है कि , मैं सत्ता में आने पर हिंदु वादियों को देख लूंगा ?तो कभी बोलता है जय श्री राम बोलने वालों को देश से निकाल बाहर करुंगा। राहुल गांधी पहले खुद बताएं कि वो किस धर्म में आता है,, यदि वह अपना धर्म हिंदू नहीं मानता है, तो उसे गांधी सरनेम लिखने का कोई अधिकार नहीं है। हिंदू समाज राहुल गांधी को बता रहा हैं कि, अगर हिंदू हिंसक होते तो उसका जवाब हिंसा से देते,संवैधानिक नहीं ।राहुल गांधी किसी और धर्म के बारे में ऐसी टिप्पणी करके बताएं? उनको फिर पता चलेगा कौन हिंसक है और कौन अहिंसक है ।

शहीद डोमेश्वर साहू शासकीय महाविद्यालय जामगांव आर मे संपन्न हुई एक दिवसीय नई शिक्षा नीति पर कार्यशाला

पाटन (समय दर्शन)। शहीद डोमेश्वर साहू शासकीय महाविद्यालय जामगांव आर मे इस सत्र से लागू होने वाली नई शिक्षा नीति के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य की अध्यक्षता में सभी प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों को छत्तीसगढ़ उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें मास्टर ट्रेनर डॉ अवधेश श्रीवास्तव एवं डॉक्टर एसके दास ने नई शिक्षा नीति के संबंध में नए प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार विषय चयन किया जाएगा, विद्यार्थियों का मूल्यांकन या परीक्षा पद्धति कैसे होगी, स्किल डेवलपमेंट के विषय , जनरल इलेक्टिव विषयों, आंतरिक और टर्म एक्जाम , चौथे वर्ष में ऑनर्स, बीच में पढ़ाई छोड़ देने पर बनाए गए नियम और प्रमाण पत्र, मार्किंग सिस्टम, अधिकतम 7 साल की समय सीमा जैसे सभी नियमों को साझा किया . उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक विद्यार्थी इस नई शिक्षा नीति से नए विषयों को भी अध्ययन कर सकता है उदाहरण के लिए एक कला क्षेत्र का विद्यार्थी विज्ञान और वाणिज्य के विषय और इसी प्रकार अन्य संकाय के विद्यार्थी भी अन्य विषयों को पढ़कर भविष्य में अच्छा स्थान प्राप्त कर सकते हैं. दोनों मास्टर ट्रेनर्स ने बड़े ही सरल और सहज तरीके से नियमों को क्रमबद्ध रूप से समझाया। महाविद्यालय के सभी अधिकारियों कर्मचारियों तथा तृतीय चतुर्थ वर्ग के कर्मचारियों ने भी अपनी उपस्थिति दी और अपने प्रश्नों को पूछ कर जिज्ञासाओं को शांत किया . महाविद्यालय की प्राचार्य नीता कुंभारे ने इस प्रस्तुति के लिए दोनों मास्टर ट्रेनर्स को धन्यवाद दिया और नई शिक्षा नीति के लिए ओरिएंटेशन के माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक करने के की बात रखी. इस कार्यशाला में कर्मा माता महाविद्यालय जामगांव आर के प्राध्यापकों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया . सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने नई शिक्षा नीति के विजन और मिशन को मिलकर सफल बना बनाने के लिये अपनी प्रतिबद्धता दिखाई।

शासकीय प्राथमिक शाला बड़ेटेमरी में जगत परिवार के कराया न्योता भोज

बसना (समय दर्शन)। बसना विकासखंड के प्राथमिक शाला बड़ेटेमरी में जगत परिवार द्वारा न्योता भोजन कराया गया।मुख्य रूप से बड़ेटेमरी समन्यवक एवं प्रधानपाठक वारिश कुमार, सहा.शिक्षक श्रीमती नीलम कुमार, मथामणि साहू,शाला प्रबंधन समिति के सदस्य,रसोइया और स्वीपर उपस्थित रहे । ग्राम के भोला जगत के द्वारा न्योता भोजन आयोजित किया गया। जगत परिवार के वैवाहिक कार्यक्रम के अवसर पर स्कूल परिसर में सभी बच्चों को स्वादिष्ट भोजन कराया गया है। पौष्टिक भोजन ग्रहण करके बच्चे बहुत खुश हुए। शासन की अच्छी पहल की शुरुआत बसना विकासखंड के कई स्कूलों में प्रारंभ हो चुकी है। इस न्योता भोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों को मिलने वाले पोषण आहार नित नये सुधार के साथ गुणवत्तायुक्त हो। इस पहल के लिए बसना विकासखंड के विकासखंड शिक्षा अधिकारी जे.आर. डहरिया, सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी विनोद शुक्ला, बद्रीप्रसाद जोल्हे,लोकेश्वर कंवर,बीआरसीसी ललित देवता , सेजेस प्राचार्य खिरोद्र पुरोहित, समन्वयक संघ के प्रांताध्यक्ष पूर्णानंद मिश्रा, संकुल समन्वयक अनिल साव, आरिफ बेग,रोहित पटेल,ब्लाक अध्यक्ष तिरिथ राम पटेल,राजेश साहू,अमित भोई, डिजेंद्र कुर्रे,लोकनाथ खुटे, सुरेश प्रधान,सुरेश नंद,संतराम बंजारा, गोसाइराम खुटे,त्रिलोचन पटेल,पुरंदर बंछोर, इंदल पटेल,भूपेश पाढ़ी ने बधाई दी है।

सांसद रूपकुमारी चौधरी ने रायपुर से बरगढ रेल लाईन हेतु रेलमंत्री को सौंपा ज्ञापन

- इस रेल लाईन से बसना सरायपाली को होगा विशेष लाभ

बसना(समय दर्शन)। सांसद रूपकुमारी चौधरी ने एक बार पुनः रायपुर से संबलपुर नई रेलवे लाइन निर्माण हेतु लोगों को सुविधा प्रदान करने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से दिल्ली में मिलकर मांग पत्र सौंपा। गौरतलब हो कि,वर्ष 1962 से लगातार सरायपाली, बसना, पिथौरा से सोहेला ओड़िसा के लोगों की ओर से रायपुर से संबलपुर रेलवे लाइन की मांग की जा रही है। जिसे सभी राजनीतिक दलों का सहयोग और समर्थन रहने के बावजूद रेल मार्ग क्षेत्रवासियों के लिए सपना ही बनकर रह गया है।

सालों से सरायपाली, बसना के विधायक सहित महासमुंद के सांसदों द्वारा बार-बार रेल मंत्री को आवेदन दिया जाता रहा है। लेकिन अब तकनीकी रूप से संभव है यह रेल लाइन।

सत्र 2011-12 में छत्तीसगढ़ विधान सभा में इस रेल लाइन को जोड़ने हेतु ध्वनिमत से प्रस्ताव पास हो चुका है। यह मांग 1962 से चल रही है। सभी दलों के विधायक व सांसदों का इस मांग को लेकर सदैव समर्थन

रहा है। वर्ष 2012 में इस रेल लाइन के लिए केंद्रीय रेल बजट में सर्वे के लिए प्रावधान किया गया था। अनेक संगठनों की लगातार मांग उपरांत छत्तीसगढ़ रेलवे कार्पोरेशन लिमिटेड के पत्र 10 सितंबर 2018 में इस रेल लाइन को तकनीकी रूप से संभव बताया गया है।

इस रेल लाईन के बनने से रायपुर से बरगढ़ होकर छतीसगढ़ और ओड़िसा को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, व्यापारिक दृष्टि से लाखों लोगों को फायदा होगा।

आवाजाही हेतु आम लोगों 2 घंटे से कम समय लगेगा ।

मेट्रो सिटीज की दूरी 250-350 किमी कम हो जायेगी

इस संबंध नव निर्वाचित महासमुन्द सांसद रूपकुमारी चौधरी ने उनके बसना निवास मे मिडिया को बताया कि, छग-ओड़िशा के व्यापारिक, औद्योगिक, पर्यटन व सामाजिक संबंधों को मिलेगा बढ़ावा। अब तक जिसका सार्थक परिणाम सामने नहीं आया,पर रूपकुमारी चौधरी की कार्य शैली व जीवटता से प्रतीत होता है वे अपने कार्यकाल मे इस बहुद्देशीय रेल लाईन को पूरा कराकर ही रहेंगे।

रायपुर-बरगढ़ रेल लाइन जोड़ने की बात बीते पांच दशकों से चल रही है। पिछले

वर्ष रेल मंत्रालय द्वारा सर्वे कराये जाने से लोगों में उम्मीद जगी है। महासमुंद सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी ने इसे प्राथमिकता देते हुए एक बार फिर रायपुर-संबलपुर रेलवे लाईन की मांग को उठाया है। जनहित व विकास को देखते हुये इस रेल लाइन निर्माण से होने वाली सुविधाओं,तथा भविष्य में होने वाले व्यापारिक, औधोगिक, शिक्षा, रोजगार व अन्य विषयों से होने वाले लाभ और छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के लाखों लोगों की भावनाओं को केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात कर अवगत कराया है।

यह स्मरण भी कराया कि पूर्व में रायपुर-बरगढ़ रेल लाइन संघर्ष समिति द्वारा आपसे प्रत्यक्ष भेंट कर इस बहुप्रतीक्षित रेल लाईन रायपुर से बरगढ़ तक की स्वीकृति हेतु अनुरोध किया था।

जिस पर रेल मंत्रालय द्वारा तत्काल सर्वे हेतु निर्देशित कर कार्य प्रारंभ करवाया गया था, जो प्रगति पर है। पूर्व में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा भी बसना विधानसभा में रेल लाइन की घोषणा की गयी थी। जिस पर अविलंब रायपुर से संबलपुर रेल मार्ग की स्वीकृति हेतु मांग पत्र सौंपा था। इस समाचार से बसना सरायपाली पिथौरा तुमगाव के लोगों मे खुशी की लहर है।

ब्रिलियंट पब्लिक स्कूल बनारी, जांजगीर में शिक्षकों के लिए सेमीनार आयोजित

जाँजगीर। ब्रिलियंट पब्लिक स्कूल, बनारी, जाँजगीर में संस्था के संचालक श्री आलोक अग्रवाल, प्राचार्या श्रीमती सोनाली सिंह के निर्देशानुसार दिनांक-04/07/2024 को संस्था के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिये ''सक्रिय अध्ययन'' विषय पर परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के विशेषज्ञ के रुप में श्री राणा लक्ष्मण सिंह क्षत्रिय एवं राज राजेश्वरी क्षत्रिय जी रहे। कार्यक्रम के शुरूआत में संस्था की प्राचार्या द्वारा अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ एवं भेंट चिन्ह देकर किया गया। इस परामर्श कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षक-शिक्षिकाओं को सक्रिय अध्ययन के लिए जागरूक करना था। कार्यक्रम में सर्वप्रथम श्री राणा लक्ष्मण सिंह द्वारा प्रारंभ में बताया गया कि हमें इस प्रकार की शिक्षण पद्धति अपनाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को मजा आये। हमें विद्यार्थियों को ड्रीम विद्यार्थी मान कर उनका विकास करना चाहिए। शिक्षण कार्य में हमारा उद्देश्य बच्चों को पढ़ाना नही सिखाना होना चाहिए। तत्पश्चात् राज राजेश्वरी द्वारा कहा गया की शिक्षकों को अपने ज्ञान का प्रसार करते हुए विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करना चाहिए। हमेशा बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए। एक सजग शिक्षक वहीं होता है जो विद्यार्थियों के अवगुणों को निकाल कर उसके अंदर सत्गुणों को समाहित करें। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक-शिक्षिकाओं को कार्यक्रम सक्रिय रखा गया। गतिविधि के माध्यम से शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपने अंदर छिपि प्रतिभा को उजागर किया। कार्यक्रम के अंत में उनके द्वारा बताया गया कि हमारा उद्देश्य केवल बच्चों का विकास करना होना चाहिए। कार्यक्रम में शामिल होकर संस्था परिवार उत्साह से भर गया। इस कार्यक्रम के सफल संचालन में संस्था के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं, एडमिन स्टाफ एवं ग्राउंड लेवल स्टाफ का विशेष योगदान रहा।

बच्चो ने विधायक एवं महापौर से किया प्रॉमिश-भोजन के वक्त नही देखेंगे टीवी व मोबाइल

- विधायक,महापौर ने तिलक लगाकर छात्राओं को वितरण की सायकल,पुस्तकें,बोले जीवन भर साथ देती है शिक्षा की अमूल्य निधि

दुर्ग (समय दर्शन)। नगर निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत बीआर जोशी शासकीय आदर्श कन्या उ.मा.वि. में प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक गजेंद्र यादव,महापौर धीरज बाकलीवाल एवं पार्षद नजहत परवीन मौजूद थे।सबसे पहले विधायक गजेंद्र यादव एवं महापौर धीरज बाकलीवाल ने मां सरस्वती की पूजा अर्चना की। सरस्वती पूजन पश्चात् अपने आशीर्वचन के रूप में विधायक व महापौर ने संबोधित करते हुए कहा कि यह प्राय: देखा गया है कि सरकारी स्कूल कम संसाधनों में बेहतर परिणाम देते है और देश के अधिकांश अधिकारी सरकारी स्कूलों के ही पढ़े हुए होते है।उन्होंने बच्चों को अच्छे से पढ़ने के लिए प्रेरित किया।विधायक गजेंद्र यादव एवं महापौर धीरज बाकलीवाल ने तिलक लगाकर छात्राओं को पाठ्य पुस्तकें प्रदान कीं और बोले जीवन भर साथ देती है शिक्षा की अमूल्य निधि।उसके बाद उन्होंने बच्चो को मुंह मीठा कर बच्चो को पाठ्य पुस्तकें और गणवेश का वितरण भी किया गया। इस बीच बच्चो को तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में सभी

शिक्षक,शिक्षिकाएं एवं बच्चे उपस्थित रहें।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य कृष्णा अग्रवाल ने की। छात्राओं ने वंदना प्रस्तुत की. जिसके बाद स्कूल में सत्र की शुरुआत होने पर बच्चों का शिक्षकों ने गर्मजोशी से स्वागत किया गया।इस अवसर पर विधायक ने कहा शाला प्रवेश उत्सव एक ऐसा समारोह है जिसमें हम बच्चों का सम्मान करते है। इससे उनका मनोबल बढ़ता है और पढ़ने की ललक पैदा होती है। महापौर ने कहा कि आदर्श कन्या स्कूल में यहां पढ़ने वाले बच्चे जब पढ़कर आगे निकलते है तो अपने आप में काफी गौरवान्वित होते है।उन्होंने कहा कि अध्ययन करने वाले बच्चों से कहना चाहता हूं कि वे पढ़ाई के प्रति ध्यान दे, टॉप टेन में अपना स्थान बनाएं।स्कूल के बच्चो ने विधायक गजेंद्र यादव एवं महापौर धीरज बाकलीवाल से किया प्रॉमिश कहा भोजन के वक्त नही देखेंगे टीवी व मोबइल। विधायक गजेंद्र यादव एवं महापौर धीरज बाकलीवाल ने शाला प्रवेश उत्सव के दौरान बच्चो का गुलाल लगाकर स्वागत किया और मुंह मीठा कराकर पाठ्यपुस्तक,गणवेश तथा सायकल वितरण भी किया। उन्होंने कहा कि इस स्कूल का इतिहास अनुशासन और उच्च शिक्षा के लिए जाना जाता है। उन्होंने ये भी कहा कि ज्ञान एक ऐसा धन है जिसे कोई न तो चुरा सकता है और न ही छीन सकता है।इस अवसर पर उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन बच्चो के लिए सर्वश्रेष्ठ जीवन है।इसके बाद विधायक एवं महापौर ने प्राचार्य सहित छात्राओं के साथ वृक्षारोपण करने छात्रसंघ ने शपथ ली।इस अवसर पर प्राचार्य कृष्णा अग्रवाल, प्रभारी प्राचार्य हरिशर्मा,संकुल संन्यक अतीम तिवारी,व्याख्याता ए शांता,ए चन्द्राकर,कुमुद साहू,गीता सोनी, एस एन सिंह,ओपी राजपूत,योगिता देशमुख,स्वेता राजोरिया,आई भुई,धलेश्वरी ठाकुर,ममता ध्रुव व्याख्याता आदि मौजूद रहें।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.) 491111 से मुद्रित कर बी-4, प्रेस काम्प्लेक्स, इंदिरा मार्केट, दुर्ग छ.ग. 491001 से प्रकाशित। संपादक :- रोहित खड़तकर,
समाचार संपादक : दामोदर राव, फोन नं.-0788-4051213, मो. 9827104452, रायपुर कार्यालय:-0771-4218364, ईमेल - samay.darshan191@gmail.com पं. क्र. CHHHIN/2011/41517 डाक पंजीयन क्रमांक छ.ग./दुर्ग/61/2024-26